ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 अगस्त 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 18 अगस्त 2019 से 24 अगस्त 2019

भाद्रपद कृ. – 03 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 61, अंक 33, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## डी.ए.वी. कॉलेज नकोदर के 50वीं वर्ष गांठ पर 51 कुंडीय यज्ञ

के. आर.एम डी.ए.वी. कॉलेज, नकोदर में कॉलेज के 50वें स्थापना दिवस पर 51 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कॉलेज का गोल्डन जुबली लोगो जारी किया गया एवं कॉलेज के यू ट्यूब चैनल का प्रारम्भ किया गया। कॉलेज के पूर्व विद्यार्थी अध्यापक एवं शहर के विभिन्न लोगों ने इस यज्ञ में बहुत हर्षोल्लास व उत्साह से बड़ी गिनती में भाग लिया।

प्रि. डॉ. अनूप कुमार ने कॉलेज की 50वीं वर्षगांठ पर बधाई देते हुए कहा कि इस कॉलेज ने 50 वर्षो की सेवा के दौरान शैक्षिक, सांस्कृतिक व क्रीड़ा के क्षेत्रों में शानदार मील के पत्थर स्थापित किए हैं। उन्होंने निर्धन एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रकार की सुविधाओं की घोषणा की। दिव्य ज्योति जागृति संस्थान से माधवी विवेक भारती ने कॉलेज की प्रगति के लिए मुबारकबाद दी।

स्वामी विरजानंद महाविद्यालय करतारपुर के प्रिंसीपल डॉ. उदयन आर्य व उनके विद्यार्थियों ने 51 कुण्डीय यज्ञ के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कॉलेज की स्थानीय समिति के अध्यक्ष एस.डी. मेहता ने विद्यार्थों को नैतिक मूल्य अपनाने की प्रेरणा दी। समीपवर्ती डी.ए.वी. संस्थानों के प्राचार्यों, नगर से आए सम्भ्रान्त नागरिकों तथा कॉलेज के टीचिंग व नॉन टीचिंग स्टाफ ने यज्ञ में आहुतियाँ डालकर प्रार्थना की। इस समारोह में प्रो. सलिल कुमार अध्यक्ष संस्कृत विभाग एवं सीमा वधवा अध्यक्ष हिन्दी विभाग का विशेष सहयोग रहा। प्रि. डॉ. अनूप कुमार ने सारे मेहमानों का धन्यवाद किया।

## डी.ए.वी. सूरजपुर में वनमहोत्सव

डी.ए.वी. स्कूल सूरजपुर में वनमहोत्सव संपन्न किया गया जिसके अन्तर्गत छात्रों ने (कक्षा 1 से 12 तक) प्राचार्या डॉ. ममता गोयल, शिक्षकों एवं साथी छात्रों के साथ न केवल वृक्षारोपण किया बल्कि जन जागरण रैली के द्वारा वृक्षों के संरक्षण हेतु जनमानस को प्रेरित भी किया। इस अवसर पर जहाँ छोटे–छोटे छात्रों के कविता पाठ 'साँसे हो रही है कम, आओ पेड़ लगाए हम' एवं 'पेड़ लगाओ धरा को बचाओ' के द्वारा पेड़ों के संरक्षण के लिए प्रेरित किया वहीं सीनियर एवं जूनियर छात्रों के विभिन्न सदनों ने विशाल रैली का आयोजन कर एवं वृक्षों के संरक्षण के नारे दोहरा कर प्रकृति संरक्षण की वचनबद्धता को दोहराया।

पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है। इस भावना को विद्यार्थियों तथा जन सामान्य में प्रचारित करने के लिए पोस्टर मेकिंग, स्लोगन राइटिंग, कविता, भाषण, नुक्कड़ नाटिका 'मत काटो मुझे' Save sparrow, Say No to Plastic, 'Save Blue' आदि विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की गईं। नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने 'पौधागिरि' प्रोजेक्ट के तहत पोधे लगाए तथा P.T. meeting में अभिभावकों को पौधे निशुल्क वितरित किए गए। पौधों का संरक्षण तथा संवर्धन करने के लिए अध्यापकों ने बच्चों को प्रेरित किया। प्रदूषण द्वारा पर्यावरण में आये ह्रास को नियन्त्रित करने हेतु यह अत्यन्त अनिवार्य है।

इस अवसर पर वनमहोत्सव रैली शुभारम्भ करते हुए प्राचार्या डॉ. ममता गोयल ने कहा कि मानव होने के कारण हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम प्रकृति संरक्षण में अपना अभूतपूर्व योगदान देते हुए धरा को सम्पूर्ण जीव जन्तुओं के रहने हेतु एक उपर्युक्त स्थान बनाए ताकि सही अर्थों में प्रकृति हमारे लिए जीवनदायिनी बन सके एवं हमारा भविष्य सुरक्षित रह सके।

## डी.ए.वी. कॉलेज बठिण्डा में यज्ञ द्वारा नव सत्रारम्भ

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा में मासिक हवन परम्परा का निर्वहन व नव्य सत्र का शुभारम्भ यज्ञ के संग किया गया। विविध मंत्रोच्चारण से यज्ञ करते हुए **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की कामना से यज्ञाग्नि में आहुतियाँ डालकर वैदिक परम्परा का पालन किया गया। हवन में यज्ञमान की भूमिका का निवर्हन प्रो. रविन्द्र सिंह द्वारा किया गया। सम्पूर्ण स्टाफ ने इस हवन में आहुतियाँ डालकर ईश्वर से कॉलेज की उन्नति व तरक्की के साथ–साथ विश्व कल्याण की कामना की।

स्टाफ सेक्रेटरी प्रो. शीशपाल ने नूतन सत्र में स्टाफ व छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने लोकल कमेटी के प्रधान डॉ. के.के. नौरिया का इस यज्ञ में सम्मिलित होने पर अभिनंदन किया।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा ने इस नए सत्र के शुभारम्भ पर प्रसन्नता अभिव्यक्त करते हुए स्टाफ को उनके सहयोग हेतु धन्यवाद किया व छात्रों को संस्था के विकास हेतु कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि गत वर्ष कॉलेज ने विविध क्षेत्रों में प्रगति पथ का संसपर्शन किया है और इस वर्ष में भी ईश्वर की अनुकम्पा, स्टॉफ व छात्रों के सहयोग से यह कॉलेज अधिक उन्नति व प्रगति अर्जित कर नव्य आयामों को स्थापित करेगा।

डॉ. के.के. नौरिया ने नए सत्र के आरम्भ की सब को बधाईयां दी व कॉलेज की उन्नति की प्रार्थना ईश्वर के समक्ष की।

कॉलेज उपप्राचार्य प्रो. प्रवीण कुमार गर्ग ने स्टाफ को लगन व निष्ठा से अपने कर्म में रत रहने की प्रेरणा दी।

कॉलेज के आर्य समाज द्वारा सम्पूर्ण प्रबंध उचित रूप से किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 18 अगस्त 2019 से 24 अगस्त 2019

# अविवेकी जन डूब जाते हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**भि वेना अनूषत, इयक्षन्ति प्रचेतसः।**
**मज्जन्त्यविचेतसः।।**

ऋग् ९.६४.२१

ऋषिः **काश्यपः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (**वेनाः**) प्रभु–प्रेमी मेधावी जन, (**अभि अनूषत**) अभिमुख होकर (पवमान सोम प्रभु की) स्तुति करते हैं। (**प्रचेतसः**) प्रकृष्ट चित्तवाले विवेकी जन, (**इयक्षन्ति**) यज्ञ करने का संकल्प करते हैं। (**अविचेतसः**) अविवेकी जन, (**मज्जन्ति**) डूब जाते हैं।

● सोम प्रभु पवमान हैं, जग को पवित्र करने वाले हैं। जो मलिनता संसार में कई कारणों से उत्पन्न होती है उसे विविध साधनों से पवित्र करनेवाले सोम प्रभु यदि न होते तो मलिनता इतनी बढ़ जाती कि प्राणियों का जीवित रहना कठिन हो जाता। वे मानव के हृदय को भी पवित्र करनेवाले हैं, परन्तु उन्हीं के हृदय को पवित्र कर सकते हैं जो अपना हृदय पवित्र होने के लिए उन्हें देते हैं। प्रभु–प्रेमी मेधावी जन सोम प्रभु के अभिमुख हो उनके प्रति प्रणत होते हैं, उनकी स्तुति करते हैं, उनकी पावनता का गुणगान करते हैं, उन्हें आत्म–समर्पण करते हैं। परिणामतः वे 'प्रचेताः' बन जाते हैं, उनका चित्त प्रकृष्ट, पवित्र, ज्ञानमय और विवेकयुक्त हो जाता हैं। 'प्रचेताः' मनुष्य दीर्घद्रष्टा होते हैं। जिस यज्ञ को अन्य लोग निरर्थक समझते हैं, उन्हें वही प्यारा होता है। वह अपने जीवन में यज्ञ करने का संकल्प लेते हैं। वे सोम–यज्ञ करते हैं, सोम प्रभु के नाम से यज्ञ में आहुतियाँ डालते हैं, 'सोम' प्रभु का भजन–कीर्तन करते हैं और उससे प्रेरणा पाकर स्वयं भी साक्षात् 'सोम' बन जाते हैं। उनके जीवन में सोम–सदृश रसमयता, मधुरता और पावनता आ जाती है। 'सोम' के आदर्श को अपने सम्मुख रखते हुए वे अन्य यज्ञों का भी आयोजन करते हैं। 'सोम' प्रभु पावनता के यज्ञ को चला रहे हैं, वे भी समाज को पावन करते हैं। 'सोम' प्रभु सृष्टि–यज्ञ चला रहे हैं, वे भी सर्जनात्मक कार्यों को करते हैं। 'सोम' प्रभु पालन–पोषण और पूर्ति का यज्ञ कर रहे हैं, वे भी निर्बलों का पालन करते हैं, अपुष्टों को पुष्टि देते हैं, अपूर्णों के दोषों को दूर कर उनके छिद्र भरते हैं। यज्ञमयी नौका पर चढ़कर वे भव–सागर से पार हो जाते है। परन्तु जो 'अविचेताः' हैं, अविवेकी हैं, अल्पदर्शी हैं, वे न 'सोम' प्रभु का स्तवन करते हैं, न यज्ञ करते हैं। परिणामतः वे भव–सागर में डूब जाते हैं और दुर्गति पाते हैं।

❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

# त्यागमयी देवियाँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

महात्मा आनन्द स्वामी ने देवी पद्मिनी पर कथा सुनाते हुए बताया कि पद्मिनी का विवाह चित्तौड़ के महाराजा भीमसिंह के साथ हुआ। उस समय दिल्ली के सिंहासन पर अलाउद्दीन खिलजी राज्य कर रहा था। वह अत्यन्त अत्याचारी था। अत्याचार करने के लिए जो कार्य प्रारम्भ करता, उसे 'जिहाद' का नाम देता। जब उसने देखा चित्तौड़ पर विजय पाना सुगम नहीं, तो उसने कूटनीति से काम लेना शुरू किया और सन्धि का संदेश भेजा। भीमसिंह उसकी मधुर बातों में फँस गया दुर्ग के द्वार से भी बाहर चला आया जहाँ उसे बन्दी बनाकर छावनी भेज दिया। पद्मिनी ने विचार कर मन्त्री से कहा, 'अलाउद्दीन को सन्देश भेजो कि पद्मिनी शाही महल में आने के लिए तैयार है। पद्मिनी बहुत ही ऊँचे कुल की महिला है और वह पूरी सज–धज, बाजे–गाजे और अपनी सात सौ दासियों तथा सखियों के साथ दिल्ली में प्रवेश करेगी, कोई उनकी ओर आँख उठाकर भी न देखे।

**अब आगे ...**

**पद्मिनी**

चित्तौड़–वासियों को जब लगा कि उनकी महारानी अलाउद्दीन की पत्नी बनने के लिए दिल्ली जा रही है तो राजपूतों का खून खौल उठा, 'ऐसा कदापि नहीं हो सकेगा! हम प्राण दे देंगे, परन्तु यह अपमान कदापि सहन नहीं करेंगे।'

पद्मिनी के राज–भवन के बाहर बड़ी भारी भीड़ एकत्र हो गई, जो क्रोध तथा आवेश से भरपूर थी। महारानी पद्मिनी बाहर निकली और उसने बड़ी गम्भीरता से तथा प्रभावशाली शब्दों में कहा, 'चितौड़ के शूरवीर राजपूतो तथा सपूतो! चित्तौड़ के महाराज इस समय दिल्ली के बादशाह की कैद में हैं। तुम भी और मैं भी, अपने महाराज को मुक्त कराने के लिए बेचैन हैं। परन्तु दिल्लीवालों की शक्ति बहुत अधिक है। मैं जानती हूँ कि आपकी भुजाएँ फड़क रही हैं, तलवारें शत्रुओं के सिर काटने को निकल पड़ रही हैं और आप मृत्यु से जूझ जाना खेल समझते हैं, मैं जानती हूँ कि अपने महाराज के लिए आप लोग बलिदान हो जाना बहुत बड़ा पुण्य मानते हैं, परन्तु इन बलिदानों, इन परिश्रमों और इन वीरताओं का क्या लाभ, यदि महाराज फिर भी मुक्त न हो सके? मैंने एक ऐसी योजना बनाई है जिससे ये दोनों कार्य हो सकते हैं। उस योजना के सम्बन्ध में मैंने चित्तौड़ के मन्त्रियों से परामर्श कर लिया है। तुम लोग किसी प्रकार की चिन्ता न करो। तुम्हारी महारानी राजपूती गौरव को कलंकित नहीं होने देगी। मेरे वीर राजपूतो! यदि मेरी योजना सफल न हुई तो मेरे वस्त्रों में छिपी यह कटार वहीं मेरा जीवन समाप्त कर देगी।'

यह भाषण सुनकर राजपूतों को धैर्य हुआ।

उधर पद्मिनी का यह सन्देश भीमसिंह के पास कारागार में पहुँचा दिया गया कि अब उन्हें कोई कष्ट नहीं दिया जायेगा क्योंकि रानी पद्मिनी ने बादशाह के पास आना स्वीकार कर लिया है। यह सुनते ही भीमसिंह को ऐसे प्रतीत हुआ जैसे सहस्रों विषधर साँपों ने उसे डस लिया हो। वह तड़पने लगा–'इन राजपूतों की बुद्धि क्या भ्रष्ट हो गई? पद्मिनी को क्या हो गया? भगवान्! मुझे पहले मौत दे दे, फिर कोई ऐसी घटना घटे।' भीमसिंह जेल में पहले से भी अधिक मानसिक दुःख से दुःखित होने लगा।

इधर चित्तौड़ से पद्मिनी की सवारी बड़ी धूमधाम से चली। सात सौ पालकियाँ भी खूब सज़ी हुई थी। उनके अन्दर पद्मिनी की चार–चार, पाँच–पाँच विशेष सखियाँ और दासियाँ पूर्णरूप से सज़–धजकर बैठी थीं। बाजा बजानेवालों की भी बहुत बड़ी संख्या थी और वे जंगी बाजा बजा रहे थे। भेरी बजानेवालों ने भी शायद आज ही अपने जौहर दिखलाने थे।

अलाउद्दीन ने आज्ञा दे रखी थी कि मार्ग में पद्मिनी को किसी प्रकार का कष्ट न हो। जहाँ–जहाँ सवारी विश्राम के लिए ठहरी, वहीं सेवा का पूरा प्रबन्ध था। कितने ही दिनों की यात्रा के पश्चात् सायंकाल के समय यह सवारी दिल्ली पहुँची। अलाउद्दीन प्रतीक्षा की घड़ियाँ गिन रहा था, क्योंकि आज उसकी चिर–काल की कामना पूर्ण होने जा रही थी। भारत की सबसे अधिक रूपवती पद्मिनी उसकी होने जा रही थी। बादशाह इन्हीं विचारों में मग्न था कि दूत ने आकर कहा, 'बादशाह सलामत! पद्मिनी की सवारी आ गई।'

अलाउद्दीन झुँझलाकर बोला, 'अरे कमबख्त, बेगम साहिबा पद्मिनी कहो!'

दूत ने काँपकर हाथ जोड़े और बोला, 'अच्छा हुजूर! बेगम साहिबा फरमाती हैं कि आपके हुजूर में आने से पहले वह एक

शेष पृष्ठ 7 पर ☞

श्रद्धांजलि व करुणांजलि

# जंगल में मंगल–मंगल में जंगल

● देव नारायण भारद्वाज

एक महाशय पुरुष को अपने सत्कर्मों के आधार पर शतायु जीवन के बाद निधन पर स्वर्ग मिला। धर्मराज ने उनका स्वागत किया, और बोले यहाँ पर आपकी जो भी अभिलाषा होगी, पूरी की जायेगी। तो फिर हमें एक बार नरक का भ्रमण करा दिया जाये। धर्म राज ने उन्हें भेज दिया नरकलोक में, महाशय पुरुष ने विस्तृत नरक का भ्रमण किया, उन्हें वहाँ कोई भी व्यक्ति पीड़ित, दुःखी संत्रस्त नहीं दिखाई दिया, सभी प्रसन्न प्रभुदित दिखाई दिए, तो उन्होंने वहाँ के निवासियों से जिज्ञासा प्रकट की यह कैसा नरक है? यहाँ तो स्वर्ग तुल्य सुख ही सुख है वहाँ के निवासियों ने महाशय पुरुष की जय जयकार करते हुए कहा यह सब चमत्कार आपके यहाँ आगमन से संभव हो गया। आपका स्वागत है। आशय यह है कि किसी एक सत्पुरुष की उपस्थिति से सम्पूर्ण वातावरण मंगलमय हो जाता है। प्रकरण कोरा काल्पनिक ही नहीं वास्तविक भी है। महर्षि दयानन्द से अनेक स्थलों पर महन्तों ने कहा कि तुम्हारी तपस्या इतनी अधिक है–तुम्हें इसी जन्म में मोक्ष मिल जायेगा। महर्षि का आत्मविश्वास पूर्ण उत्तर होता था– मैं निरीह चीत्कार करती मानवता का उद्धार करना चाहता हूँ। उनकी पीड़ा मिट जायेगी, इसी में मेरा मोक्ष हो जायेगा।

**मैं भूतल पर नहीं संदेश स्वर्ग का लाया।**
**इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।**

धन धान्य सम्पन्न प्रतिष्ठित कुल में जन्मे मूलशंकर गृहत्याग कर ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य फिर स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास दीक्षा लेकर दण्डधारी स्वामी दयानन्द सरस्वती बन गये। उन्होंने गुरु आदेश प्राप्त कर अपनी अग्रिम साधना में बाधक समझकर दण्ड का विसर्जन कर दिया। यहाँ पर महर्षि जी के इस त्याग का स्मरण मात्र इसलिए किया गया, कि इस साहसिक कदम का अनुसरण जिस पौराणिक क्षेत्र के न केवल संन्यासी अपितु शंकराचार्य पद प्रतिष्ठा प्राप्त सन्त सत्य मित्रानन्द गिरि महाराज ने कर दिखाया। आदिवासी किसानों, निर्धनों की सेवा–सहायता में जब यह पद बाधक बनने लगा–साथ ही वरिष्ठ सन्तों के पदासीन रहने के आग्रह के बाद भी उन्होंने यह पद छोड़ दिया। नर से नारायण बना देने वाला दण्ड भी गंगा मैय्या को समर्पित कर दिया। उन्होंने सद्धर्म प्रचार के लिए देश–विदेश में दूर–दूर तक आध्यात्मिक शान्ति के मार्ग को प्रशस्त किया। जिस प्रकार वर्तमान में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर में दयानन्द दीर्घों की स्थापना के प्रयास किये जा रहे हैं। उसी प्रकार वस्तुतः बढ़–चढ़कर स्वामी महाराज ने हरिद्वार क्षेत्र में भारत माता मन्दिर की स्थापना द्वारा कर दिखाया। मन्दिर बहुत विशाल अनेक संस्तर के साथ खड़ा है। प्रत्येक संस्तर पर, देवी–देवताओं, महापुरुषों, वीर बालकों, स्वातंत्र्यवीर बलिदानियों, राष्ट्रनायकों की भव्य प्रतिमायें–पूजा से अधिक प्रेरणा के लिए हैं।

अनुरक्षा के लिए निर्धारित अत्यल्प शुल्क के बाद भी दर्शक तीर्थ यात्रियों की वहाँ अपार भीड़ लगी रहती है। उतराखण्ड के वृक्ष वनस्पति से भरपूर जंगल में स्वामी जी का अनुपम मंगल प्रकल्प है। योग गुरु स्वामी रामदेवजी के पतंजलि अभियान में स्वामी जी ने भरपूर तन–मन–धन से सहयोग किया है। दूरदर्शन की वैदिक श्रृंखला में स्वामी जी का नित्य उपदेश निर्धारित है। उन्होंने एक बार बताया था कि ब्रह्मचारी अवस्था में मुझे किसी ने सोना बनाने की प्रक्रिया बतायी थी। अर्द्ध रात्रि एकान्त में घनघोर जंगल में यह प्रयास करना था। प्रयास असफल रहा। पड़ोस के एक आश्रम में निवास कर रही किसी राज्य की महारानी को यह बात पता चली, तो उन्होंने ब्रह्मचारी को सीख दी–ब्रह्मचारी! तुम शान्ति संग्रह के लिए गृह त्याग कर यहाँ आये और सोने के संग्रह में फँस गये। इधर मैं मनो स्वर्ण छोड़कर शान्ति की खोज में यहाँ आई हूँ। लेखक उनकी उपदेश मालाओं से प्रभावित रहा है, और जब उनके द्वारा महर्षि दयानन्द का कृतज्ञता पूर्वक स्मरण किया जाता था, तो मैं स्फुरण का अनुभव करता था। पद्मभूषण स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि महाराज के 88 वर्ष में 25 जून 2019 के निधन पर श्रद्धांजलि।

**मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही।**
**लोकं पितृषु वित्त्वैधस्व यम राजसु।।**

अथर्व. 18.2.25।।

अर्थात् हे मनुष्य! तुझे यह उत्तम संसार बाधा पहुँचाने वाला न हो। यह दिव्य गुणों से युक्त महनीय भूमि माता निर्बाध तेरे अनुकूल हो, महत्त्वपूर्ण दिव्य पदार्थों को प्राप्त करके अधिकतम बढ़ाने वाली हो, जैसे माता पुत्र को आवश्यक पदार्थ प्राप्त कराके उसकी उन्नति की हेतु होती है। इस प्रकार तू संयमी होकर परमात्मा को राजा मानकर पितरों के चरणों में आलोक प्राप्त कर सतत् वृद्धि को प्राप्त कर। हिम पर्वत एवं गंगा की धाराओं से प्रवाहित पृथिवीस्थ जंगलों के संजाल को महापुरुषों ने मंगलमय बनाया। इधर मैदानी क्षेत्रों में जंगल के वृक्षों को काट काटकर मनुष्य ने कंकरीट के बहुखण्डीय विशाल भवन बना दिये। जहाँ सरोवर होते थे, वहाँ बड़े–बड़े मॉल खड़े हो गये, जिनमें चित्रपट से लेकर मौज़–मस्ती के सब सामान जुट गये। एक–एक व्यक्ति के पास एक–एक कार हो गयी, जो आवागमन के साथ–साथ वासना पूर्ति का माध्यम बन गयी। ऊपर से मंगल लगने वाला यह सब आयाम जंगल का व्यायाम बन गया। मानो मंगली जंगली हो गये।

बुलन्दशहर क्षेत्र में एक परिवार घर के बाहर बैठा था। तभी कोई दबंग साथियों के साथ वहाँ आया और एक युवती को कार में खींचने लगा। युवती तो बच गयी, किन्तु विरोध में उसकी माँ व चाची की कार चढ़ाकर हत्या कर दी गई, कुछ लोग घायल भी हुए। पुलिस इस मामले में कठोर कार्रवाई करने के बजाय हादसा बताने लगे। एक प्रकरण में युवती से एक पक्षीय प्यार जताने वाले क्रूर युवक से बचाकर, उसका विवाह कर दिया। युवक ने मौका पाकर उसकी हत्या कर दी, और उसके पति को संदेश भेज दिया, युवती अब न मेरी रही न तेरी। शिक्षण संस्थानों के मार्ग से जाने वाली किशोरियों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार के कारण छात्रायें पढ़ाई छोड़ने पर विवश हैं। अनेक परिवार अपने मकान को बिकाऊ घोषित कर ठीक टिकाऊ ठौर पर पलायन हेतु बाध्य हो रहे हैं। मोबाइल का आविष्कार वरदान बनकर आया, किन्तु वार्ताओं के द्वारा युवक–युवतियों को फँसाने–मारने का हथियार बनकर रह गया। ऐसे ही दूर सम्पर्क वार्ता से फँस अलीगढ़ की युवती बंगलौर जाने को रेलवे स्टेशन पर उतावली होकर आ गयी। उसके हाव–भाव को समझकर अधिकारियों ने परिवार को सुपुर्द कर दिया। इस सम्पूर्ण अफरा–तफरी की ढपली देर तक बजाने की आवश्यकता नहीं पाठक सब जानते हैं। दैनिक मज़दूरी पर कार्यरत श्रमिक, घरेलू नौकर–नौकरानी–सफाई–कर्मी, इसका डटकर प्रयोग करते हैं। कई लोग लूटमार करके भी महँगे मोबाइल खरीदते व प्रयोग करते हैं।

एक ओर हाईवे, हवाई जहाज, मैट्रो, ए.टी.एम, एवं ई.वी.एम आदि के मंगलमय वरदान हैं, वहीं दूसरी ओर इनको प्रयोग करने वाला मनुष्य जंगलमय अभिशाप से ग्रस्त होता चला जा रहा है। जंगल में भी एक व्यवस्था है। निर्बल जाति के पशुओं का भक्षण, सबल जाति के पशु भले करते हैं, किन्तु अपनी जाति के पशु पर आक्रमण नहीं करते हैं, अपितु उनकी रक्षा करते हैं, किन्तु मंगल मनोहर गैलेक्सी, पैराडाइज में बसने वाले मनुष्य–मनुष्य पर आघात करते हैं। उपरिलिखित अथर्व–मन्त्रणा में संसार की उपमा सर्व सुलभ प्रत्यक्ष वृक्ष से दी गई है। ऊँचा उठा हुआ, हरा–भरा, फलफूल गन्ध से समृद्ध वृक्ष जो दिखायी देता है, उसका सुदृढ़ आधार वह है जो दिखाई नहीं देता, उसे उसकी जड़ कहते हैं। यदि जड़ गल–सड़ जाती है तो उसकी हरियाली भी सूख जाती है और एक दिन वृक्ष अस्तित्व हीन हो जाता है। इसी प्रकार इस संसार को समझना चाहिए। इसके भी दो प्रक्रम होते हैं। संस्कार और स्वरूप अर्थात् जैसे संस्कार वैसा व्यवहार। सोलह संस्कार माता–पिता–आचार्य के निर्देशन में किए जाते हैं, जिनके द्वारा कोई भी स्त्री–पुरुष सभ्य–समर्थ–सौजन्य पूर्ण बनता है।

मनुष्य के स्वरूप को संस्कार सदैव आकर्षक बनाते हैं। **'कागा किसको धन हरत, कोयल किसको देत। मधुर वचन सुनाय के, जग वश में कर लेत।'** बात जंगल से आरम्भ हुई थी, वहीं लौटते हैं। जंगल में एक तपस्वी आँख बन्द कर साधना कर रहे थे। एक चील नन्हीं चुहिया को चोंच में दबाकर उड़ती जा रही थी। चील की चोंच ढीली हुई और चुहिया छूटकर महात्मा की गोद में गिर गई। उन्होंने अपनी आँखें खोली तो चुहिया की दैन्य दशा को देखा और उस पर दया आ गई। उन्होंने उसको तपस्या के बल से अति सुन्दर युवती बना दिया। युवती बड़ी तेजस्वी रूपवती दिखने लगी। उन्होंने उसके लिए तेजस्वी वर खोज लिया, सूरज। किन्तु उसने यह वर मना कर दिया कि यह बहुत गर्म है। महात्मा ने सूरज के परामर्श से मेघ का चयन किया, तो युवती ने उसे पिलपिला बताकर मना कर दिया। मेघ के संकेत से वायु से बात की, तो उसे अति चंचल दूर–दूर तक भागने वाला बताकर इन्कार कर दिया। वायु ने बताया कि यदि इसे प्रवाहशील नहीं तो स्थिर पर्वत ठीक रहेगा। युवती ने उसे अत्यधिक कठोर बताकर अस्वीकृत कर दिया। पर्वत ने कहा मैं भले ही कठोर हूँ, किन्तु एक जीव ऐसा हैं जो मुझ में भी छेद कर देता है और अपना बिल या घर बना लेता है। महात्मा ने पूछा, वह कौन है–पर्वत ने कहा–चूहा। युवती भी तुरन्त बोल पड़ी–हाँ यही ठीक है। इस द्रष्टान्त के द्रष्टान्त को लेना चाहिए, अर्थात् संस्कार और स्वरूप में संस्कार ही वृक्ष की जड़ के समान फलदायक होते हैं। इनसे ही मानव का सच्चा संस्करण सर्व सुखदायक होता है।

**वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)**

# ऋषि दयानन्द के अनुसार कृष्ण लीला से कृष्णजी का अपमान होता है

● मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द जी का जिन दिनों मेरठ में आगमन हुआ था, तब वहाँ **'धर्मरक्षिणी सभा'** की ओर से तीन प्रश्न उपस्थित किये गये थे, जिनका स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में उत्तर दिया था। ऋषि के व्याख्यानों में उपस्थित एक ऋषि भक्त ने उनके दिये उत्तरों को नोट कर लिया था और पं. लेखराम जी के कई वर्ष बाद उनसे मिलने पर उन्होंने अपनी स्मृति व लेख के आधार पर वह पूरा विवरण उन्हें उपलब्ध कराया था। तीन प्रश्नों में तीसरा प्रश्न था **'जो अवतार हुए हैं, ये कौन हैं? उनका (अवतारों का) बनाने वाला कौन है और पराक्रम उनको किसने दिया अथवा ये समर्थ हैं? अवतारों का–सा सामर्थ्य किसी राजा में अथवा मनुष्य में नहीं सुना। प्रमाण श्रुति, स्मृति का हो तो लिखियेगा।'**

स्वामी जी ने इस प्रश्न का अति विस्तृत उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि आप जिनको परमेश्वर का अवतार कहते हैं वे महापुरुष थे। परमेश्वर की आज्ञा में चलते थे, सत्यधर्मी और न्याय आदि गुणों वाले थे, वेदादि सत्यशास्त्रों को पूर्ण जानने वाले थे। **आज तक कोई और ऐसा हुआ और न है परन्तु आप जो इन उत्तम पुरुषों को परमेश्वर का अवतार मानते हैं यह आपकी भ्रान्ति है।** भला परमेश्वर का अवतार कभी हो सकता है? वह तो अज़र और अमर है। जब उसका अवतार हुआ तो उसका वह गुण (अज़रता व अमरता) जाता रहा। इसके अतिरिक्त जब परमेश्वर व्यापक और सर्वत्र विद्यमान है तो उसका एक शरीर में आना क्यों हो सकता है? और यदि कहो कि परमेश्वर प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान है। हाँ, यह तो सत्य है परन्तु यह नहीं कि केवल एक मनुष्य और एक स्थान में है और अन्य में नहीं। इसके अतिरिक्त परमेश्वर को जन्म लेने की आवश्यकता ही क्या है? यदि आप कहें कि रावण और कंस आदि को परमेश्वर अवतार लिये बिना कैसे मार सकता था? तो आपका यह कहना अत्यन्त अशुद्ध है क्योंकि जब वह निराकार परमेश्वर बिना शरीर के सब जगत् का पालन और धारण कर रहा है और बिना शरीर के जगत् का प्रलय भी कर सकता है, तो उसको बिना शरीर के कंस आदि एक–दो मनुष्य का मारना क्या कठिन था? और जो यह बात आप पूछते हैं कि इन अवतारों को बनाने वाला कौन है और किसने इनको पराक्रम दिया अथवा वे स्वयं समर्थ थे? इसका उत्तर अत्यन्त सरल और स्पष्ट है। सबको बनाने वाला और सबको पराक्रम देने वाला परमेश्वर ही है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई बनाने और पराक्रम देने वाला नहीं हो सकता। परन्तु आपके प्रश्न से प्रकट होता है कि आपकी दृष्टि में कदाचित् परमेश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य भी बनाने और पराक्रम देने वाला है। अपने आप तो न कोई समर्थ हुआ और न है और न होगा। यह जो आप प्रश्न करते हैं कि उन अवतारों का सा सामर्थ्य और किसी राजा अथवा मनुष्य में क्यों नहीं हुआ, यह आपका कहना बिलकुल व्यर्थ है, क्योंकि जिसमें जैसे गुण होते हैं उसमें वैसा सामर्थ्य होता है और जैसा जिसमें सामर्थ्य है वैसे ही उसमें गुण होते हैं। आजकल बहुत से ऐसे मनुष्य हैं कि जो बिलकुल कर्महीन और अज्ञानी हैं और बहुत से ऐसे विद्वान् समर्थ और पराक्रमी हैं कि हजारों में भी अन्य कोई उनके समान नहीं है, तो क्या इसी कारण उन समर्थ मनुष्यों को परमेश्वर का अवतार कहना या मानना उचित है? वाह ! वाह ! परमेश्वर के अवतार होने का आपने क्या बढ़िया प्रमाण सोच रखा है। किसी ने सच कहा है–''प्रत्येक की विचारशक्ति उसके सामर्थ्य के अनुसार होती है'' परन्तु बड़े दुःख की बात है कि आप लोग यद्यपि रामचन्द्र जी और श्रीकृष्ण आदि उत्तम पुरुषों को परमेश्वर का अवतार मानते हैं फिर भी उनकी परले सिरे की निन्दा और बुराई करने में संलग्न रहते हैं। नगर–नगर और गली–गली में उनकी पाषाण आदि की मूर्ति बनवाकर उनसे भीख मँगवाई जाती है और पैसे–पैसे के लिए सर्वसाधारण के सामने उनके हाथ फैलवाये जाते हैं। जब धनवान् अथवा साहूकार शिवालय या मन्दिर में आते हैं या पुजारी जी स्वयं उनके पास जाते हैं तो कहते हैं कि सेठ जी! आज तो नारायण भूखे हैं, राधा–कृष्ण जी को कल रात से बालभोग भी नहीं मिला है। इन दिनों सीता–राम जी को प्रसादी की कठिनाई पड़ रही है। सरदी के कपड़े नारायण के पास नहीं हैं और शीतकाल सिर पर आ गया है। पुराने कपड़े तो सीता–राम जी के कोई दुष्ट चुरा ले गया, उसी दिन से हम सीताराम जी को ताली कुंजी में बन्द रखते हैं, नहीं तो उनकी भी कुशल न थी। यदि किसी रईस या धनवान् की ओर से शिवालय या मन्दिर का मासिक व्यय आदि नियत हुआ तो पुजारी जी या बाबा जी जब कहीं बैठे होते हैं तो अपनी झूठी प्रेमभक्ति जताने के लिए कहते हैं कि लो यजमान! हमको जाने दो, अब हमारे सीता–राम जी या राधा–कृष्ण जी भूखे होंगे और जब जायेंगे तो उनको भोजन मिलेगा अन्यथा भूखे बन्द रहेंगे।

**अब देखिए, रामलीला को संगठित करके किस प्रकार आप लोग अपने उत्तम पुरुषों की नकल करवाते और उनकी कितनी निंदा कराते हैं?,** अन्य मत वालों को उन पर हँसवाते हैं और उनका अपमान कराते हो। इस लीला का तो कुछ वर्णन ही नहीं। देखो! प्रायः लोग, क्या धनवान्, क्या रईस, क्या दुकानदार और क्या श्रमिक, सभी इस रास की सभा में एकत्रित होते हैं और रास देख–देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। कोई कहता है कि कृष्ण जी अच्छा नाचते हैं, कोई कहता है राधा जी बड़ी सुन्दरी है, कोई कन्हैया जी के गाने पर प्रसन्न हो रहा है तो कोई राधा जी की मूर्ति पर मोहित और लट्टू है और अत्यन्त प्रेम–भक्ति प्रकट कर रहा है। कोई कहता है वाह! वाह! साक्षात् राधा–कृष्ण जी ही आ गये हैं। इन्हीं कन्हैया जी ने हज़ारों गोपियों के साथ भोग–विलास किया है, 1600 रानियाँ रखी हैं, बहुत दूध–माखन चुरा कर खाया है। नहाती हुई नंगी स्त्रियों के कपड़े तक चुरा लिये हैं और उनको पहरों नग्न सामने खड़ा रखा है। अधिक और कहाँ तक तुम्हारी बातों का वर्णन करूँ। अब लज्जा भी रोकती है और बुद्धि भी आज्ञा नहीं देती। **परन्तु खेद! लाख बार खेद! आप लोग अपने देश के ऐसे–ऐसे राजा–महाराजाओं को जो हज़ारों–लाखों पर शासन करते थे और उनका पालन तथा सहायता करते थे, ऐसे–ऐसे उत्तम पुरुषों को जो जीवन पर्यन्त परमेश्वर की आज्ञा में रहे, सत्यवादिता, सदाचार और धर्म के कामों में अद्वितीय रहे, खाने कपड़े के लिए भी भिक्षुक बनाते हो, अधर्मी, व्यभिचारी तमाशबीन और चोर ठहराते हो और केवल अपनी स्वार्थसिद्धि और मनोरंजन के लिए उनकी अपकीर्ति करते और कराते हो।** उनके विषय में ऐसी–ऐसी झूठी कहानियाँ, जिनका प्रमाण किसी पुस्तक या इतिहास से प्राप्त नहीं हो सकता, अपने मन से बना–बना कर वर्णन करते हो और फिर अपने आप को उनका भक्त, गुणगायक और प्रशंसक समझते हो। हाय, हाय, इन बातों के वर्णन से मन पर इतना शोक और दुःख का भार है कि अधिक वर्णन करने का सामर्थ्य नहीं। इसलिए इसी पर सन्तोष करता हूँ और अपने इस कथन के समर्थन में कि परमेश्वर का अवतार किसी अवस्था में नहीं हो सकता है, दो वेदमन्त्र कहता हूँ। पहला यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का आठवाँ मन्त्र है और दूसरा यजुर्वेद के 31 वें अध्याय का पहला मन्त्र है––

**स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं**
**शुद्धमपापविद्धम्।**
**कविर्मनीषी परिभूः**
**स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्**
**व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।**

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि परमेश्वर सबमें व्यापक और अनन्त पराक्रम वाला है, वह सब प्रकार के शरीर से रहित है, कटने–जलने आदि रोगों से परे है। नाड़ी आदि के बन्धन से पृथक् है। सब दोषों से रहित और सब पापों से न्यारा है। सब का जानने वाला, सबके मन का साक्षी, सबसे श्रेष्ठ और अनादि है। वही परमेश्वर अपनी प्रजा को वेद के द्वारा अन्तर्यामी रूप से व्यवहारों का उपदेश करता है।

**सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।**
**स भूमिं सर्वतः**
**स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।**

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि परमेश्वर तीनों प्रकार के जगत् (अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान्) को रचता है, उससे भिन्न दूसरा कोई और जगत् को रचने वाला नहीं है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है। मोक्ष भी परमेश्वर की ही कृपा से मिलता है। पृथिवी आदि जगत् की स्थिति भी परमेश्वर के व्यापकता गुण के कारण है। वह परमेश्वर इन वस्तुओं से पृथक भी है क्योंकि उसमें जन्म आदि व्यवहार नहीं। वह अपने सामर्थ्य से सब जगत् को उत्पन्न करता है और स्वयं कभी जन्म नहीं लेता है। सब, अब यह बात भली प्रकार सिद्ध हो गई कि वेद और उपर्युक्त युक्तियों के आधार पर परमेश्वर का अवतार किसी प्रकार नहीं हो सकता।

पंडित लेखराम जी ने ऐसे–ऐसे अनेकानेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग ऋषि दयानन्द के जीवन चरित में दिये हैं जिन्हें पढ़कर पाठकों का मार्गदर्शन होता है। उनका लिखा ग्रन्थ ऋषि का जीवन चरित भी है और उनके उपदेशों का ग्रन्थ भी इसे कहा जा सकता है। ऋषि दयानन्द ने उपुर्यक्त प्रसंग में अवतार व मूर्तिपूजा का जो मार्मिक वर्णन किया है, उसे पढ़कर हमें लगा कि हमें इसे अपने मित्रों तक पहुंचाना चाहिये। उसी का परिणाम यह लेख है। हम आशा करते हैं कि हमारे पाठक मित्र इस लेख को पसन्द करेंगे और इससे उन्हें ज्ञान लाभ होगा। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
मो. 09412985121

# सुसंस्कृत भव

● डॉ. सुशील वर्मा

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। चरक ऋषि का कथन है–**"संस्कारो हि गुणन्तराधानमुच्यते"** अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर सद्गुणों का आधान कर देने का नाम संस्कार है। संस्कार मानव के नवनिर्माण की योजना है। बालक पर तीन प्रकार के संस्कारों का प्रभाव होता है। जन्म के साथ ही वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। पहले वे जिन्हें वह जन्म जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है, दूसरे संस्कार वे जो वह अपने माता–पिता के संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से वहन करता है और इसके साथ ही पर्यावरण द्वारा इस जन्म में प्राप्त संस्कार। संस्कार नवनिर्माण की यह योजना है जिसमें बालक को ऐसे पर्यावरण से आच्छादित कर दिया जाए जिसमें उसे अच्छे संस्कारों में पनपने का अवसर प्राप्त हो। बुरे संस्कार चाहे वे पिछले जन्मों के हों, माता–पिता से वंशानुगत प्राप्त हो रहे हों, दूर किया जाये। भौतिक पर्यावरण अर्थात् प्रकृति के साथ सम्पर्क का बालक के जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है। ऋग्वेद (5.2.14) के अनुसार

**"उपहरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियो विप्रा अजायत"**

शिक्षा केन्द्र प्रकृति के उन स्थलों में होते थे जहाँ तक एक तरफ पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ, दूसरी ओर कल–कल करती नदी का प्रवाह। बालक प्रकृति के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित करता हुआ शिक्षा ग्रहण करता था। प्रकृति के शुद्ध वातावरण में रहने से बाल मस्तिष्क को शुद्ध संस्कारों से विकसित किया जाए, शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य था। इसके साथ–साथ मानसिक पर्यावरण अर्थात् कुल की भावना को भी जीवित रखा जाता था। माता–पिता चूँकि हर समय बालक की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे सकते, इसलिए उसे शिक्षा के लिए बाहर भेजा जाता था। शिक्षा संस्थानों का दायित्व था कि वे चरित्र निर्माण कर उन्हें शिक्षित करें। इस प्रयोजन के लिए 'गुरुकुल पद्धति' का निर्माण किया। 'गुरुकुल' अर्थात् 'गुरु का कुल'। यहाँ 'कुल' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया कि शिक्षा का काम बच्चों को एक छोटे कुल अर्थात परिवार में से निकाल कर बड़े परिवार में प्रवेश करवाया जाए। उसकी धारणा यही थी कि बच्चे का विकास कुल में ही होना चाहिए। पहले माता पिता का 'कुल', फिर गुरु के 'कुल' और फिर समाज के 'कुल' में। समाज के कुल में जब वह प्रवेश करता है तो 'समानता की भावना' के साथ प्रवेश पाता है। गुरु जब बच्चे को अपने 'कुल' में पालता है तो एक उत्कृष्ट भाव के साथ उसका पालन करता है। इस सम्बन्ध में अथर्ववेद का मन्त्र (11,3,5,3) कहता है।

**आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।**
**तं रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।।**

अर्थात् आचार्य उस बालक को इस प्रकार सुरक्षित रखता है जैसे माता पुत्र को अपने गर्भ में सुरक्षित रखती है। गुरु और शिष्य के निकटतम सम्बन्ध को समझाने के लिए माता तथा गर्भ के सम्बन्ध से अधिक सुन्दर अन्य उपमा क्या हो सकती है। बालक माता–पिता को तो छोड़ आता है, परन्तु उसका स्थान आचार्य ले लेता है। वह आचार्य उसका शिक्षक ही नहीं, पिता भी होता है, विद्या उसकी माता तथा गुरु के अन्य शिष्य उसके भाई। एक ऐसे परिवार का अंश जहाँ जन्म जाति का कोई भेद नहीं, सारा समाज ही उसका परिवार। आज स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय शिक्षण ालय न होकर फैक्ट्रियाँ बन गई हैं, जिनमें कुछ फैक्ट्री के मालिक हैं, कुछ मज़दूर और परिणाम बेचैनी, अराजकता एवं भेदभाव।

गुरुकुल में प्रवेश होते ही बालक को तीन प्रक्रियाओं में से गुजरना आवश्यक है। आश्रमवास, उपनयन संस्कार एवं ब्रह्मचर्य व्रत पालन।

**आश्रमवास**–आश्रम का अर्थ है 'श्रम'। यहाँ श्रम ही श्रम है, आलस्य को स्थान नहीं। परिश्रम अर्थात् तपस्या ही मूलमन्त्र है। गुरुकुलवास को ब्रह्मचर्याश्रम कहा गया है। बालक को शिक्षित किया जाता है–**"कर्म कुरू, दिवा मा स्वाप्सी, क्रोधानृते वर्जय, उपरि शय्यां वर्जय"** काम करते रहो, श्रम का जीवन बिताना, निठल्ले नहीं रहना, रात को सोना, दिन सोने के लिए नहीं काम करने के लिए है। क्रोध मत करना, झूठ मत बोलना, गद्दे पर नहीं पड़े रहना, तपस्वी का जीवन बिताना। अथर्ववेद का ब्रह्मसूक्त उपदेश देता है–

**"ब्रह्मचर्येण तपसा देवामृत्युमुपादनत"**

आश्रम में कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं, न कोई गरीब, न कोई अमीर, सभी भाई एक समान, एक गुरु के शिष्य, न कोई जात–पात, न कोई भेद–भाव।

**उपनयन संस्कार**–दूसरी प्रक्रिया है उपनयन संस्कार, उपनयन अर्थात् उप–समीप, नयन–ले जाना। तात्पर्य गुरु के समीप चले जाना–यह है उपनयन। इस संस्कार के समय आचार्य शिष्य के प्रति कहता है–

**"मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तं अनुचितं ते अस्तु"**

आचार्य शिष्य को विश्वास दिलाता है कि तेरे हृदय को मैं अपने हृदय में लेता हूँ। तेरे चित्त को मैं अपने चित्त में लेता हूँ। वे दोनों एक दूसरे के निकट आने का इतना प्रयत्न करते हैं कि एकमना हो जाए। **"मम वाचं एकमना जुषस्व"**। यह पराकाष्ठा है गुरु के आदर्श की, शिष्य के प्रति अपने कर्त्तव्य की प्रतिज्ञा। हृदय एवं चित्त दो ही तो बहुमूल्य तत्त्व हैं जिसे गुरु ने अपना बना लिया। इसी कारण से ही शिष्य **'द्विज'** है अर्थात् दूसरा जन्म। पहला जन्म माता–पिता के और दूसरा गुरु के हृदय से, चित्त से। **"आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कुणुते गर्भमन्तः"** अर्थात् उसके गर्भ से मानसिक जन्म। तभी तो शिष्य को 'अन्तेवासी' कहा गया अर्थात् गुरु के भीतर बसा हुआ। गुरु के हृदय में वास करने वाला।

**ब्रह्मचर्यव्रत पालनः**– यह तीसरी प्रक्रिया है। ब्रह्मचारी का अर्थ है **'ब्रह्मणि चरतीति ब्रह्मचारी'** अर्थात् जो ब्रह्म में विचरण करे, वह ब्रह्मचारी। ब्रह्म अर्थात् जो महान है। तात्पर्य यह कि जो बालक जीवन में महान होने की अभिलाषा को मस्तिष्क तथा हृदय में लेकर गुरु के पास आता है वह ब्रह्मचारी। दूसरा अर्थ है अपने शरीर की भौतिक शक्ति का संचय करना, वीर्य को क्षीण नहीं होने देना। सदाचारी जीवन यापन करना। पुस्तक ज्ञान के अतिरिक्त चरित्र निर्माण करना, गुरुकुल का उद्देश्य रहा है। वैदिक विचारधारा में शिक्षक को आचार्य कहा गया है। 'आचारं **ग्राह्यतीति आचार्य'** केवल मात्र इतना ही नहीं, कि ब्रह्मचारी को मौखिक तौर पर सदाचार की शिक्षा दे; अपितु **'ग्राहाति'** अर्थात् शिक्षक स्वयं सदाचार का आचरण करता हुआ बालक को ऐसी परिस्थिति में रखें कि शिष्य सदाचार को ही ग्रहण करें। उपनिषदों में शिष्य गुरु के पास **समित्पाणि** लेकर पहुँचता था। **'समित्पाणि'** का अर्थ हाथ में समिधा लेकर जाना। कहने को तो समिधा एक लकड़ी ही है। परन्तु अग्नि के स्पर्श पाकर वह प्रदीप्त हो जाती है। इसी प्रकार शिष्य भी गुरु के पास उस जड़ समिधा की तरह प्रवेश करता है। परन्तु गुरु के सान्निध्य में प्रदीप्त हो कर समाज को प्रकाशित कर देता है। शिष्य का आत्मसमर्पण ही उसे उत्कृष्ट बना देता है।

**मिटा दे अपनी हस्ती को यदि कुछ मर्दवां चाहे।**
**कि दाना खाक में मिलकर,**
**गुलोगुलज़ार होता है।।**

आचार्य के स्पर्श से शिष्य अग्नि की भाँति प्रदीप्त होने का संकल्प लेकर उपस्थित हुआ है। यदि आचार्य स्वयं ही बुझी हुई अग्नि है तो वह शिष्य का क्या प्रदीप्त करेगा? इसलिए आचार्य अपनी मर्यादा को अनुशासन में रखकर स्वयं सदाचार का अनुसरण कर शिष्य का मार्ग प्रशस्त करवाने में सफल होता है। वही गुरु है, वही आचार्य है।

वैदिक शिक्षा का लक्ष्य केवल पुस्तक ज्ञान तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु पुस्तक अध्ययन के साथ–साथ जीवन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी आवश्यक एवं उपयोगी माना गया है। इस सम्बन्ध में उपनिषदों में इसका विस्तृत वर्णन है। मुण्डक उपनिषद में शौनक आचार्य अंगिरस को कहता है कि मैं चारों वेद, छन्द, कल्प, निरुक्त, शिक्षा आदि सब पढ़ चुका हूँ। इससे मुझे **'अपरा विद्या'** का ज्ञान तो हो गया, परन्तु **पराविद्या** का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। यहाँ अपरा विद्या का सम्बन्ध भौतिक विज्ञान से है और आत्मविद्या को **'पराविद्या'** कहा गया है। शौनक ने ScientificèPhysical ज्ञान तो प्राप्त कर लिया परन्तु Spiritual knowledge नहीं प्राप्त कर पाया, कहने का तात्पर्य यह है कि भौतिक ज्ञान से आत्मज्ञान कहीं उच्च है। ऐसा ही वर्णन छान्दाग्योपनिषद् में नारद द्वारा अपने आचार्य सनत् कुमार को किया गया है। नारद ने सब भौतिक विद्याओं के ज्ञान के बारे में बता दिया और कहा **"सोऽहं भगवां मन्त्रविदेवास्मिनात्मवित्"** अर्थात् मैं **'मन्त्रवित्'** तो हो गया हूँ परन्तु **'आत्मवित्'** नहीं हुआ। अमृत की प्राप्ति तो आत्मज्ञान से ही होगी। सारांश यह है कि वैदिक शिक्षाओं में भौतिक शिक्षा तो है ही परन्तु आत्मविद्या अथवा अध्यात्मिका को उच्चतम माना जाता रहा है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि शिक्षा ग्रहण के पश्चात् स्नातक से यही अपेक्षा की जाती थी कि स्वाध्याय करते हुए प्रवचनों द्वारा जन–जन में ज्ञान की वृद्धि करो और जनमानस को सुमार्ग का उपदेश दे। दीक्षान्त समारोह में उससे प्रतिज्ञा ली जाती थी **"स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्"** (तैत्तिरीयोउपनिषद् शिक्षा वल्ली)

ऐसी ही रही है हमारी संस्कृति, हमारी परम्पराएँ। यही थी बालक को 'द्विज' बनाने की प्रतिज्ञा, नव निर्माण की योजना एवं बालक को सुसंस्कृत बनाने की साधना। आशीर्वाद यही थे **'सुसंस्कृत भव'**।

गली मास्टर मूलचन्द वर्मा,
फाजिलका (पंजाब)
मो. 7009822720,9217832632

# प्राकृतिक संसाधनों से राष्ट्र की समृद्धि

● डॉ. अशोक आर्य

परमपिता परमात्मा ने राष्ट्र की समृद्धि के लिए बहुत से प्राकृतिक पदार्थ दिए हैं। हमारे सुखों को बढ़ाने के लिए नदियाँ और समुद्र दिए हैं। हमें अपने जीवन यापन के लिए अनेक प्रकार के फल और वनस्पतियाँ दी हैं। हमारे उत्तम स्वास्थ्य के लिए बहुत प्रकार के पौष्टिक पदार्थ और रोगनाशक बूटियाँ हमें दी हैं। हम अपनी मेहनत से इन्हें सुरक्षित रखें और राष्ट्र को समृद्ध बनाने में अपना योग दें। इस सम्बन्ध में इस मन्त्र में बहुत ही सुन्दर उपदेश किया गया है।

**यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुं ।**
**यस्यामिदनं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेय दधातु ।।**

अथर्ववेद ।।

मन्त्र मानव मात्र के कल्याण के लिए परमपिता परमात्मा के दिए प्राकृतिक उपादानों का वर्णन करते हुए उपदेश करता है कि हे मानव! प्रभु की दी इस उत्कृष्ट भेंट को संभाल कर रख। इस सम्बन्ध में मन्त्र में उल्लिखित उपदेश इस प्रकार है :–

**1. जल संसाधनों से संपन्न मातृभूमि**

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा का ही परिणाम है कि हमारी मातृभूमि में उस प्रभु ने हमारे कल्याण के लिए, हमारे सुखों के लिए और हमारे जीवन यापन के लिए उसने हमें अनेक प्रकार के जल के संसाधन दिए हैं। यदि यह जल के साधन न होते तो हमारा जीवन दूभर हो जाता है। हमें भोजन बनाने के लिए जल न मिल पाता। पीने के लिए भी इसका अभाव बना रहता और कृषि आदि कार्यो में तो जल के बिना कुछ भी संभव नहीं है। इन सब आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उस प्रभु ने इस भूमि पर अनेक प्रकार के जल के संसाधन दिए हैं। इन संसाधनों में उस पिता ने अनेक प्रकार की नदियाँ दी हैं, नाले निरंतर बहते हुए दिए हैं, अनेक तालाब भी उस पिता ने जल से भर दिए हैं। अनेक प्रकार की झीलों का भी प्रभु ने हमारे लिए निर्माण किया है। इतना ही नहीं परमपिता परमात्मा ने हम पर दया करते हुए विशाल सागर भी हमें दिया है ताकि हम जल की सहायता से अपने जीवन को सुचारू रूप से चला सकें ।

**2. वनस्पतियों से भी भूमि को संपन्न बना ॥**

हम जानते हैं कि पिता ने जल तो दिया, जो हमारे जीवन को चलाने का एक साधन है किन्तु अकेले जल से हमारे कार्य सिद्ध नहीं हो सकते, इसके लिए हमें कुछ और भी चाहिए ।प्रभु हमारी आवश्यकताओं को जानता और समझता है। इसलिए उस पिता ने हमारे सुखों के लिए अनेक प्रकार के फलों से लदे हुए वृक्ष, अनेक प्रकार की वनस्पतियों से भरी हुए पौधे तथा अनेक प्रकार की शाक–सब्जियों के पौधे हमारे जीवन की रक्षा और हमारे सुखों को बढ़ाने के लिए दिए हैं। इन सब के उपभोग से हम अपने जीवन को लम्बे काल तक जी सकते हैं। इनके उपभोग से ही हम और अन्य जीवधारी प्राणियों में चलने–फिरने व अनेक कार्य करने की शक्ति आती है।

**3. सब मिलकर रहें**

इन सब के उपभोग से ही खेती करने वाले किसान, अनेक प्रकार के कल कारखानों में कार्य करने वाले शिल्प विशारद उत्तम शिल्पकार तथा अनेक प्रकार के उद्योगों को चलाने वाले बड़े–बड़े उद्योगपति आदि लोग मिलकर रहते हैं। इनके मिलजुल कर रहने का ही परिणाम होता है कि हमारे खेतों–खलिहानों में अनेक वनस्पतियों के दानों से भरी हुई खेतियाँ लहलहाती हैं, शिल्पकार अपने पुरूषार्थ से उत्तम वस्तुओं का निर्माण करते हैं तथा उद्योगपति अपने उद्योग धंधों के माध्यम से बहुत कुछ बना कर मानव मात्र के सुखों को बढ़ाने का कार्य करते हैं। इस सब से मातृभूमि गौरवन्वित होती है। इस लिए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि यह सब प्रकार के सुख देने वाली हमारी मातृभुमि हमें सब प्रकार के भोगों और सब प्रकार के धन ऐश्वर्यो से संपन्न करें।

**4. प्रभु के दिए उपहारों का उचित प्रयोग करें**

परमपिता परमात्मा ने हमारे जीवन को सुखी तथा दीर्घजीवी बनाने के लिए यह जो संसाधन दिए हैं, हम इन्हें सुरक्षित रखते हुए इन सब संसाधनों का उत्तम विधि से उपभोग तथा प्रयोग करें। यथा :–

अ) हमारे पास जो जल के स्रोत हैं, हम उनको नष्ट न होने दें अपितु इन्हें हम यातायात के साधनों के रूप में प्रयोग में लावें। इन में नावों अथवा जहाज़ों के द्वारा सामान इधर–उधर ले जा कर हम अपने व्यापार को बढ़ावें।

आ) इन नदियों से हम नहरें आदि निकाल कर अथवा इन पर बाँध लगा कर इनके जल को सुरक्षित करें और इसे अपने देश की खेती की सिंचाई के लिए विधिपूर्वक प्रयोग में लायें तो हमारे देश में फलों, फूलों तथा वनस्पतियों का कभी अभाव दिखाई नहीं देगा।

इस प्रकार प्रभु ने हमारे सुखों को स्थाई रूप से बनाए रखने के लिए हमें प्रकृति के बहुत से संसाधन भेंट स्वरूप दिए हैं। हम अपनी बुद्धि तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर इन संसाधनो को न केवल सुरक्षित व शुद्ध ही रखें अपितु इन सब का अपने जीवन को सुरक्षित बनाने के लिए उत्तम प्रकार से उपभोग करें तो हमारे जीवन में कभी भी किसी प्रकार का अभाव नहीं आयेगा। बस एक मात्र आवश्यकता है कि हम कभी प्रमाद न करें, सदा पुरुषार्थी बनें रहें और इस पुरुषार्थ के बल पर हम इन संसाधनों का प्रयोग भी करें, संरक्षण भी करें और इन्हें बढ़ाने का भी प्रयास करें।

1/61 प्रथम तल, राप्रस्थ ग्रीन, सेक्टर–7
वैशाली,
उ.प्र. भारत

# जयन्त नार्लीकर

● शिव नारायण उपाध्याय

जयन्त नार्लीकर का जन्म 19 जुलाई 1938 ई. को कोल्हापुर में हुआ था । उनके पिता प्रो. विष्णु वासुदेव नार्लीकर थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा सन् 1943 ई. से 1953 ई. तक विश्व विद्यालय, बालक विद्यालय, वाराणसी में हुई थी। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सन् 1957 ई. में बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे सभी कक्षाओं में पहले स्थान पर रहे । सन् 1957 ई. में वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश गए। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के **FITZ WILLIAN HOUSE** में प्रवेश लिया। उन्होंने **TRIPOS** भाग **1, 2** व **3** परीक्षाओं में बैठकर प्रथम भाग श्रेणी में दूसरा भाग भी प्रथम श्रेणी में और तीसरा भाग विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण किया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से **TRIPOS** की उपाधि लेने के बाद नार्लीकर ने अपना शोध कार्य **Prof. FRED HOYLE** के मार्गदर्शन में प्रारम्भ किया और 1963 में **M.A** की उपाधि तथा 1964 में **Ph.D** की उपाधि प्राप्त की ।सन् 1976 में उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से ही **D.Sc** की उपाधि प्राप्त की। जयन्त नार्लीकर को कई छात्रवृत्तियाँ और पारितोषिक प्राप्त हुए।

वे सन् 1957 ई. से 1963 ई. तक कैम्ब्रिज में **J.N.** टाटा स्कॉलर के रूप में रहे। फिर सन् 1960–61 **W.A. MEEK** के रूप में रहे । सन् 1960 ई. नभ विज्ञान में टाइसन मैडल कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया। उन्हें 1962 ई. में स्मिथ प्राइज तथा सन् 1967 ई. में **ADAM'S PRIZE** प्राप्त हुआ। दोनों पारितोषिक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा ही दिए गए। सन् 1973 ई. में उन्हे इंस्टिट्यूट ऑफ साइन्स बाम्बे द्वारा **Gold Jubilee** मेडल पुरस्कार में दिया गया। सन् 1963 से सन् 1969 तक नार्लीकर **King's College Cambridge** के सदस्य रहे। वे **Indian National Science** के भी सन् 1976 में सदस्य रहे। सन् 1962–63 में नार्लीकर **FITZ WILLIAN HOUSE CAMBRIDGE** में गणित विभाग के निदेशक भी रहे। अपने शानदार कार्य के कारण नार्लीकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक बन गए। सन् 1967 ई. से सन् 1972 ई. तक नार्लीकर **FITZ WILLIAN HOUSE CAMBRIDGE** के स्टाफ के सदस्य भी रहे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के किसी भी महाविद्यालय में स्टाफ के सदस्य के रूप में रहना ही बडे सम्मान की बात होती है। सितम्बर 1972 ई. में अपने देश की सेवा करने के लिए भारत लौट आए। वे टाटा फन्डामेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट बम्बई में नभ भौतिकी के प्रोफेसर बन गए। अपने शानदार शोध कार्य के करण नार्लीकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के नभ वैज्ञानिक बन गए। उन्हें कई प्रसिद्ध संस्थाओं ने कई विशेष व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। उनमें से कुछ संस्थाएँ हैं–

लोकमान्य तिलक व्याख्यान

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

# पूर्व मीमांसा दर्शन का सामान्य परिचय

● पण्डित राजवीर शास्त्री

महर्षि जैमिनि द्वारा प्रणीत इस दर्शन में धर्म और धर्मी का वर्णन किया गया है।

इस दर्शन में वैदिक यज्ञों में मन्त्रों का विनियोग, यज्ञों की सांगोपांग प्रक्रियाओं का ऊहापोह किया गया है।

यदि योग दर्शन अन्तःकरण की शुद्धि के उपायों तथा अविद्या के नाश के उपायों का वर्णन करता है, तो मीमांसा मानव के पारिवारिक जीवन से राष्ट्रीय जीवन तक के कर्तव्य कार्यों का वर्णन करता है, जिससे समस्त राष्ट्र की सर्वविध उन्नति सम्भव है। अश्वमेधादि यज्ञों का वर्णन इसी बात के परिचायक हैं।

वैशेषिकदर्शनके **'तदवचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्'** तथा इसी दर्शन के प्रशस्तपाद भाष्य के **'तच्चेश्वरनोयनाभिव्यक्ताद्धर्मादेव'** में जो वेदों को ईश्वरोक्त होने से प्रामाणिक माना गया है और वेदोक्त बातों को ही धर्म माना है, उन्हीं बातों की पुष्टि मीमांसा में **'अथातो धर्म जिज्ञासा'** तथा **'चोदनालक्षणो धर्मः'** कहकर की है।

यथार्थ में क्रियात्मक धर्म का उदात्त रूप यज्ञ है और यज्ञों की मीमांसा इस दर्शन में की गई है।

यज्ञादि कर्म काण्ड से वेद मन्त्रों का अत्यधिक सम्बन्ध है। सम्पूर्ण कर्म काण्ड मन्त्रों के विनियोग पर आश्रित है। मीमांसा शास्त्र में मन्त्रों के विनियोग का विधान किया गया है।

अतः धर्म के लिये वेद को जैमिनि ने भी परम प्रमाण माना है और जैसे निरुक्त में वेद मन्त्रों की सार्थकता के विषय में कौत्स के पूर्वपक्ष को रखकर युक्तियुक्त उत्तर दिया गया है, वैसे ही मीमांसा (1.2.1) में वेद मन्त्रों को सार्थक कहकर विपक्ष के प्रश्नों का समाधान किया है। और मीमांसा में वैदिक यज्ञों पर सांगोपांग ऊहापोह भी किया गया है।

इसमें प्रधान भाग तीन माने गए हैं–दर्शपूर्णमास, ज्योतिष्टोम = सोमयाग और अश्वमेध। ये तीनों प्रकृति याग होने से प्रधान हैं और उनके जो विकृत याग अग्निष्टोम आदि हैं, वे अप्रधान माने गये हैं।

यज्ञों में मन्त्रों के विनियोग पर जैमिनि मुनि ने श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान और समाख्या, ये मौलिक आधार माने हैं, जिनकी व्याख्या इस दर्शन में ही देखी जा सकती है।

ऋत्विजों के कर्मों पर विचार, संवत्सर यज्ञादि का वैज्ञानिक वर्णन, मन्त्र का लक्षण, वेद का लक्षण, वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों का भेद, वेदों का स्वतः प्रामाण्य, मन्त्रों के स्वर सहित पाठ और यज्ञ में एकश्रुति पाठ पर विशेष विचार, देवता विचार, वर्णों को यज्ञाधिकार, स्त्रियों को यज्ञ का अधिकार, निषाद को भी यज्ञ करने का अधिकार, इत्यादि विषयों पर इस दर्शन में बहुत गूढ एवं स्पष्ट विचार किया गया है।

**स्रोत : पातंजलि योग दर्शन भाष्यम्, प्राक्कथन, पृ.13–14, प्रस्तुति : भावेश मेरजा**

☞ पृष्ठ 02 का शेष

# त्यागमयी देवियाँ

बार जेल में भीमसिंह को मिलना जरूरी समझती हैं।'

अलाउद्दीन ने चहककर कहा, 'ठीक है। जेल के अन्दर उन्हें भेजकर मुलाकात करा दो।'

जेल के द्वार खुल गए और पद्मिनी उस कोठरी में प्रविष्ट हुई जहाँ भीमसिंह बैठा राजपूतों तथा पद्मिनी पर धिक्कार भेज रहा था। जब उसने पद्मिनी को देखा तो उसके नेत्रों में रक्त उतर आया। पद्मिनी भी समझ गई और कहने लगी, 'प्राणनाथ! अधिक बात करने का समय नहीं है। इन सात सौ पालकियों में तीन हज़ार सशस्त्र योद्धा राजपूत हैं। एक हज़ार शस्त्रों से सुसज्जित बाजे बजानेवाले हैं। यह तलवार पकड़ो और मेरे साथ हो लो।'

क्षण–भर में ही भीमसिंह सब–कुछ समझ गए। फिर क्या था! मारकाट आरम्भ हो गई। बाहर घोड़े खड़े ही थे। पद्मिनी और भीमसिंह उन पर सवार होकर चित्तौड़ की ओर उड़ चले। पालकियाँ खाली हो गईं। उनके अन्दर से निकले हुए राजपूतों ने बादशाह के सरदारों और सेना को काटना शुरू किया। शाही सेना में भगदड़ मच गई। वे तो पद्मिनी के पधारने की खुशी में मस्त थे। वहाँ तो नाच–रंग हो रहा था। इस आकस्मिक आक्रमण ने सबको भौंचक्का बना दिया।

दौड़े–दौड़े सिपाही अलाउद्दीन के पास पहुँचे। उनके आते ही बादशाह ने पूछा, 'क्या पद्मिनी महल में पहुँच गई'

सिपाहियों ने कहा, 'हुजूर, गजब हो गया! वह तो भीमसिंह को जेल से निकालकर चित्तौड़ को चली गई है और आपके लिए यह सन्देश दे गई है कि जाकर अपने बादशाह से कह दो कि वह भी हमारे महाराज को छल से किले के बाहर से कैद कर लाया था और पद्मिनी भी दिल्ली के किले के अन्दर से महाराजा को मुक्त कराके लिए जा रही है। शक्ति हो तो अब महाराज को बन्दी बनाकर दिखाओ!'

अलाउद्दीन की छाती पर तो साँप ही लोट गया। ठण्डी साँस लेकर उसने कहा, 'औरत होकर हम सबको ठग गई? बुजदिलो, डूब मरो!' उसी समय फौज़ को तैयारी करने की आज्ञा दी कि वह पद्मिनी और भीमसिंह का पीछा करे। परन्तु इस समय तक वे बहुत दूर निकल चुके थे। हर दस–बीस मील के अन्तर पर नये घोड़े उनको मिलते गए। पद्मिनी ने यह सारी योजना बड़ी बुद्धिमत्ता से पहले ही बना रखी थी।

अगले दिन सारी दिल्ली में पद्मिनी की वीरता की ही चर्चा थी। अलाउद्दीन तो सारी रात सो नहीं सका। प्रातः होते ही वह सेना के पास पहुँचा। उसने कहना शुरू किया, 'इस्लाम के बहादुर सिपाहियो! देखा आपने कि एक काफिर औरत हम सबको कैसे चकमा दे गई? इससे इस्लाम का सिर नीचा हो गया है। अब तो जिहाद के बिना यह कलंक नहीं उतरेगा। बहादुरी इसी में है कि पद्मिनी और भीमसिंह दोनों को पकड़कर यहाँ लाया जाए और उन्हें मुसलमान बनाकर यहाँ रखा जाये। यह तभी हो सकता है जब हम सिरों पर कफन बाँध कर निकल पड़ें और चित्तौड़ की ईंट से ईंट बजा दें। कहो बहादुरो, तैयार हो?'

सारी सेना ने तलवारें उठाकर 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाया और चित्तौड़ की ओर कूच होने लगा।

उधर पद्मिनी तथा भीमसिंह जब चित्तौड़ पहुँच गए तो राजपूतों ने पद्मिनी की बड़ी भारी प्रशंसा की। पद्मिनी ने कहा, 'अभी प्रशंसा का समय नहीं है। एक भयंकर युद्ध लड़ना होगा। अभी से तैयारी आरम्भ कर दो! प्रदेश के राजपूतों को सन्देश भेज दो कि चित्तौड़ की लाज बजाने की घड़ी आ पहुँची है! देश के लिए बलिदान देने होंगे!'

अलाउद्दीन ने अब के चित्तौड़ पर चढ़ाई के लिए भारी तैयारी की। नई भर्ती भी की गई। राजपूताना का इतिहास लिखनेवाले लिखते हैं कि इतनी बड़ी सेना दिल्ली से चली तो मार्ग के सारे ग्रामों को जलाती चली गई। सारे प्रदेश नष्ट करता हुआ अलाउद्दीन चित्तौड़ के पास जा पहुँचा। राजपूत भी तैयार थे। यद्यपि इनकी संख्या इस्लामी सेना की अपेक्षा बहुत ही थोड़ी थी, फिर भी देश–रक्षा का उत्साह उन्हें शत्रु का मुख मोड़ने के योग्य बनाता रहा। कितने ही महीनों तक इस्लामी सेना चित्तौड़ तक पहुँच नहीं सकी और राजपूतों ने इसे दूर ही रोके रखा। परन्तु कब तक? वीर राजपूत लगातार अपने बलिदान देते चले गए। मातृभूमि पर शीश चढ़ाना वे अपना सौभाग्य समझते थे। अत्याचार और पाप के सामने शीश झुकाना उनके स्वभाव में ही न था।

अलाउद्दीन प्रतिदिन नई सेना दिल्ली से मँगवा लेता। अन्त में राजपूत लड़ते–लड़ते चित्तौड़ के दुर्ग के अन्दर बैठकर लड़ने लगे। शाही फौजों ने दुर्ग को घेर लिया। अन्दर बैठकर भी राजपूतों ने पूरी योग्यता से युद्ध किया, और छः मास तक शाही फौजों को दुर्ग में न घुसने दिया। परन्तु किले में खाने–पीने का सामान समाप्त होने लगा। तब एक दिन भीमसिंह ने बड़ा दरबार किया। सारे मुखिया राजपूतों को निमंत्रित किया। जब सब आ गए तो महाराजा भीमसिंह ने कहा, 'अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ प्राण देनेवाले राजपूतो! तुमने जिस वीरता, जिस योग्यता से यह युद्ध लड़ा है, आनेवाली सन्तानें आपको धन्य मानेंगी। परन्तु अब दुर्ग में जीवन–निर्वाह का सामान नहीं रहा। अब दो ही मार्ग हैं–या तो दुर्ग में बंद रहकर हम भूख–प्यास से तड़पते हुए प्राण दे दें, या फिर केसरी बाना धारण करके दुर्ग से निकलकर शत्रु पर टूट पड़ें और वीरों की भाँति युद्ध–क्षेत्र में अपने प्राण त्यागकर वीरगति प्राप्त कर लें। बोलो! किस मार्ग पर चलना स्वीकार है?'

एक ही ध्वनि में सबने उत्तर दिया, 'वीरगति! हाँ, केवल वीरगति!'

'परन्तु ठहरो! दुर्ग का द्वार खोलकर शत्रु पर टूट पड़ने से पहले इन सहस्रों युवतियों, देवियों, राजकुमारों का प्रबन्ध आवश्यक है।' एक विशालकाय वृद्ध राजपूत ने कहा।

महाराज भीमसिंह ने कहा, 'ठीक है, उनका प्रबन्ध राजपूती मर्यादा के अनुसार पहले ही होना उचित है और वह एक ही प्रबन्ध है कि चित्तौड़ की देवियाँ अपनी महारानी–सहित जौहर की रीति का अवलम्बन करें।'

सभा में सारे उपस्थित राजपूतों ने कहा, 'स्वीकार है! स्वीकार है!'

ऊपर देवियाँ इस सभा की सब वार्ता सुन रही थीं। वे भी पुकार उठीं, 'हमें भी स्वीकार है।'

*क्रमशः*

# देश के इतिहास को समझें

● डॉ. स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी

गतांक से आगे ...

"ब्रिटिश शासन भारत में ईश्वरीय देन है तथा अंग्रेज़ शिक्षित, सभ्य एवं श्रेष्ठ मानव है।" इस विचार को मुस्लिम शासन से त्रस्त यहाँ के जन–मानस में बिठाने का पूर्ण प्रयास अंग्रेज़ों ने किया। इसके पीछे उनका उद्देश्य शासन के साथ–साथ इस देश में ईसाई धर्म का प्रसार था। यहाँ बड़ी संख्या में ईसाई मिशनरियों को शहरों, कस्बों तथा दूरदराज के दुर्गम क्षेत्रों में भेजा गया। सेवा को इन लोगों ने अपना हथियार बनाया। अत्यन्त पिछड़े क्षेत्रों में चिकित्सा तथा शिक्षा की व्यवस्था इन मिशनरियों ने अवश्य की। इसके लिए विदेशों से धन की भी व्यवस्था होती रही, जैसे वर्तमान समय में पैट्रो डॉलर। लेकिन सारे प्रयासों के बाद भी अंग्रेज़ों को आशातीत सफलता नहीं मिली। उनका मस्तिष्क इसी चिन्तन में डूबा रहा कैसे भारत को ईसाई देश बनाया जाये?

अंग्रेज़ आश्चर्यचकित थे। 1050 साल तक मुस्लिम शासकों के अत्याचारों, धर्मान्तरण की साम–दाम–दण्ड–भेद की नीति के बाद भी यहाँ के लोग अपनी धार्मिक आस्थाओं से जुड़े हुए हैं। अरब से मोरोक्को तक इस्लाम का प्रभुत्व फैला किन्तु भारत इसका प्रतिरोध करता रहा। इसलिए ऐसे प्रयत्न किये जाएं जिससे मूल ही नष्ट हो जाए, ऐसे विचार–मंथन के पश्चात् अंग्रेज़ों ने शिक्षा–प्रणाली को बदलने की योजना बनायी। इसका दायित्व भारत में लम्बे समय तक रहे तथा यहाँ के जन–जीवन की अच्छी जानकारी रखने वाले टी.बी. मैकॉले को सौंपा गया।

उत्साही लॉर्ड मैकॉले ने भारतीय समाज के गहन अध्ययन, शिक्षाविदों एवं समाजशास्त्रियों से विचार–विमर्श के पश्चात् 1835 में शिक्षा–नीति प्रस्तुत की। उनकी इस योजना पर ब्रिटिश संसद में भी कई सवाल खड़े किये गये लेकिन वह अपनी योजना को विधेयक के रूप में स्वीकार कराने में सफल हो गया। इसके पीछे यहाँ के कार्यरत पादरियों का भी बड़ा योगदान था। इस बात को दोहराने का उद्देश्य मैकॉले की उस भावना को दर्शाने का है जिसे याद रखना आवश्यक है –

We must do our best to form a class who may be interpreter between us and the millions who we govern, and a class of persons Indian in blood and colours, but English in taste, opinion, words and intellect.

स्वतन्त्र भारत की बागडोर जिन्हें दी गई, वे लार्ड मैकॉले के ही वर्ग (class) के व्यक्ति थे यानी अंग्रेज़ी ज्ञान को उत्तम मानने वाले। अतः इतिहास को सत्य के आधार पर लिखने का साहस करता भी कौन?

अलेक्जेन्डर कनिंघम, गवर्नर जनरल लार्ड ऑकलैण्ड का ए.डी.सी. बनकर भारत आया। वह भी लॉर्ड मैकॉले की तरह निर्माण, निर्णय तथा प्रभावी (creative, decisive and effective) बुद्धि वाला शातिर व्यक्ति था। उसी के मस्तिष्क की उपज Archaeological Exploration in India थी जिसे वह ईसाई धर्म के प्रसार में आवश्यक मानता था। उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टर कर्नल साइक्स को इस सम्बन्ध में लम्बा पत्र भी लिखा। बात आगे बढ़ती गयी। कनिंघम को 1861 में भारत का 'पुरातत्व सर्वेक्षक' (Archaeological Surveyer) नियुक्त किया गया। फिर वह सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ 1871 में डायरेक्टर जनरल बन गया। सन् 1885 तक के अपने कार्यकाल में उसने वह सब कर दिखाया जिसे हम आज तक भुगत रहे हैं। उसके साथ कार्लाइल व बेंगलर डायरेक्टर रहे। बेंगलर की दृष्टि में कुतुबमीनार हिन्दू स्तम्भ था लेकिन हुआ वही जैसा कनिंघम ने चाहा।

मैक्समूलर को भी इसी परिप्रेक्ष्य में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय भेजा गया। जर्मन स्वयं को आर्य कहते हैं इसलिए मैक्समूलर को वेदों के भाष्य का दायित्व दिया गया। उसने घोर पौराणिक युग के सायण व महीधर के वेदभाष्यों का सहारा लेकर जो मन में आया लिख दिया। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, निघंटू के तो मैक्समूलर ने दर्शन भी नहीं किये थे, तब भाष्य बिना व्याकरण के कैसे कर पाता? उसने वेदों की उत्पत्ति करीब 3500 वर्ष पूर्व मानी और इन महानतम ग्रंथों को गड़रियों के गीत की संज्ञा दे दी। उसके समय तक अंग्रेज़ी शिक्षा–पद्धति भारत में जड़ें जमा चुकी थी और मैक्समूलर यहाँ के लोगों के हो गये पूजनीय!

मैक्समूलर का उद्देश्य क्या था? उसी के शब्दों में –

"The ancient religion of India is doomed and if Christianity does not step in, whose fault will be?"

मैक्समूलर का वेदों का अनुवाद विश्व में तेज़ी से विस्तारित किया गया। यहाँ के अंग्रेज़ी पढ़े–लिखे लोगों ने आग में घी का काम किया। उन्होंने प्राचीनतम ग्रन्थों पर अनेक प्रश्न खड़े किये। मैक्समूलर की भावना–"मेरा यह ग्रन्थ उत्तरकाल में भारत के भाग्य पर दूर तक प्रभाव डालेगा" को किसी ने या तो समझने का प्रयास ही नहीं किया अथवा अंग्रेज़ी शिक्षा से इतने मानसिक दास हो गये कि सोचने की क्षमता ही खत्म हो गई।

कनिंघम ने यहाँ की प्राचीन संस्कृति व सामाजिक संरचना को उपेक्षित रखा। यदि इनका गहराई से अवलोकन करता तो उसे ज्ञात होता श्रीरामचन्द्र की राजधानी अयोध्या सरयू के तट पर है। कृष्ण की लीला–स्थली नन्दग्राम कालिन्दी के किनारे बसी है। राजा शान्तनु का महल व किला हस्तिनापुर में गंगाजी के तट पर है। महाराजा युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ का राजप्रसाद यमुना के किनारे निर्मित किया। कुम्भ के चारों स्थल–हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन व नासिक नदियों के तट पर ही स्थित हैं। आर्य दैनिक जीवन में स्वच्छता व सैनिटेशन को महत्त्व देते थे। उन्हें जल संरक्षण, उसे स्वच्छ रखने की विधि आती थी। इसलिए नदियों के किनारे दुर्ग व महल बनाये। यों भी, हवन तथा संध्या के समय आचमन जल से ही होता है।

यमुना के किनारे मकबरा! वास्तव में 8वाँ आश्चर्य। पवित्र गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी आदि नदियाँ हिन्दुओं की धार्मिक आस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। क्या अर्जुमन्दबानो की आत्मा यमुना में स्नान करने जाती है? शाहजहाँ ने अपने 29 साल 7 माह के शासन में छोटे–बड़े 48 युद्ध लड़े। तब उसे ताजमहल का निर्माण करने का समय कब व कैसे मिला? लालकिला चाहे दिल्ली का हो या आगरा का अथवा फतेहपुर सीकरी ये हिन्दू निर्माण हैं। जेम्स फर्ग्यूसन ने सत्य को शब्दों में अपनी पुस्तक हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इस्टर्न आर्किटैक्चर में व्यक्त करते हुए लिखा–"मुसलमानों द्वारा अनेक मन्दिर हड़प उन्हें मस्जिद तथा मकबरे कह देने के कारण उन इमारतों को इस्लामिक वास्तुकला ही समझना चाहिए।"

अंग्रेज़ इतिहासकारों ने धर्मान्ध, क्रूर, निरंकुश बादशाह अकबर को महान क्या कहा, उनकी जूठन से पलने वाले यहाँ के इतिहासकार भी उसे महान लिखने लगे। अकबर में क्या महानता थी? चित्तौड़गढ़ युद्ध में मारे गये सैनिकों की जनेऊ का वजन साढ़े चौहत्तर मन था, इतना बड़ा कत्लेआम फिर भी महान? क्या अकबर ने अपनी बेटी या अपने दरबारियों की बेटियों की शादी किसी हिन्दू राजा या सामन्त से की? ये इतिहासकार अकबर की मूर्ति की पूजा करें लेकिन वह स्वाभिमानी देशभक्तों का महान नहीं हो सकता है। सर एच.एस. इलियट के अनुसार–

Muslim History is a impudent and interesting fraud.

क्रिश्चियन हों या इस्लामिक, ये जहाँ कहीं भी गये वहाँ की सभ्यता को मिटाकर अपना बना दिया। प्रारम्भ में ईसा के अनुयायी 10–20 की संख्या में कहीं एकत्रित होकर चर्चा करते थे। सम्भव है इसी से 'चर्च' शब्द की उत्पत्ति हुई हो। रोमन सम्राट कांस्टटाइन ने जब ईसाई मत स्वीकार किया तभी इस धर्म का यूरोप में तेज़ी से विस्तार हुआ। नये धर्मावलम्बियों ने पुरानी सभ्यता को पूरी तरह समाप्त कर अपनी सभ्यता को स्थापित किया। हेनरी–टॉमस बकल ने बहुत स्पष्ट लिया है–

"Christian priests have obscured the annuls of every Europeon people they converted."

*क्रमशः*

**"भारत में अग्रेज़ी साम्राज्य और स्वतंत्रता संग्राम" से साभार**

---

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

## जयन्त नार्लीकर

सन् 1966 में विश्व एवं भौतिकी के नियम पूना विश्व विद्यालय में FRIDAY EVENING DISCOURSE 1970 ई. रायल इन्स्टीट्यूट लन्दन में विषय THE UNIVERSE AND ARROW OF TIME मराठी विज्ञान कांग्रेस में अध्यक्षीय भाषण जालना, विषय परमाणु और विश्व इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स बम्बई में Golden Jubilee Lectures 1973 विषय 'क्या भौतिकी के नए नियम आवश्यक हैं? 13 नवम्बर 1976 को नार्लीकर ने नेहरू यादगार पर 10वाँ व्याख्यान दिया। विषय विज्ञान और समाज के विकास में वैज्ञानिक दृष्टिकोण में तीन बातें होती हैं। (1) प्रयोग (2) निरीक्षण (3) निर्माण यद्यपि वैज्ञानिक दृष्टिकोण EOD के नीचे स्थित होता है। उन्होंनें यह भी कहा कि देश में होने वाले Miracles की भी योग्य अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा जांच होनी चाहिए। यदि ये Miracles धोखा हैं और अपने आपको भगवान का अवतार कहने वालों ने फैलाए हैं तो दंड देना चाहिए। इससे समाज इन धोखेबाज लोगों से मुक्त होगा। प्रोफेसर नार्लीकर ने कई शोध पत्र लिखे हैं, कई लोकप्रिय लेख लिखे हैं, सैद्धान्तिक भौतिकी पर कई कहानियाँ लिखी है। वे अभी भी अपने कार्यों में व्यस्त हैं। इति।

**73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी**
**कोटा (राजस्थान) 324009**

# महर्षि दयानन्द की गुरु श्रृंखला की कुछ जानकारियाँ

● खुशहालचन्द्र आर्य

मैं महर्षि दयानन्द की गुरु श्रृंखला के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ, उससे पहले मैं उनके जीवन परिचय पर कुछ प्रकाश डालना चाहता हूँ। महर्षि दयानन्द के बाल्यकाल का नाम मूलशंकर था। मौरवी राज्य के टंकारा नामक ग्राम में एक सुसम्पन्न, उच्चकुलीन वेदपाठी सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण पिता कर्षण जी तिवारी, माता अमृता बेन के कुल में दीपक के रूप में फाल्गुन कृष्ण दशवीं सम्वत् 1881 तद्नुसार 12 फरवरी सन् 1825 में उनका जन्म हुआ। मूलशंकर अपने जीवन में अनेक गुरुओं से अलग–अलग विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हुए अन्त में व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द से तीन वर्ष उनकी गोद में बैठकर वेदों का पूरा ज्ञान प्राप्त किया और व्याकरण पर पूरा अधिकार बनाकर वेदों के अविद्वान्, स्वार्थी पण्डितों ने जो गलत अर्थ लगा कर लोगों को ठग रहे थे तथा वेदों के प्रति अश्रद्धा के भाव पैदा कर दिये थे, लोग वेदों से दूर होते जा रहे थे जिससे देश में अज्ञान अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया था, ऐसी स्थिति में देव दयानन्द ने वेदों के मन्त्रों का सही अर्थ लगाकर वेदों की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया जिसके लिए महर्षि दयानन्द को किन–किन गुरुओं से शिक्षा ग्रहण की, उसका उल्लेख इसी भाँति है, इसको पढ़कर सुधि पाठकों की महर्षि दयानन्द के गुरु श्रृंखला की जानकारी बढ़ेगी, ऐसी मुझे आशा है। सब से प्रथम गुरु महर्षि के पिता कर्षण जी तिवारी–महर्षि जी के सब से बड़े गुरु उनके ही पिता कर्षण जी तिवारी थे, जिन्होंने उनको पाँच वर्ष की आयु में ही विद्या पढ़ाना आरम्भ कर दिया। फिर आठ वर्ष की आयु में उनका यज्ञोपवीत संस्कार बड़ी विधि पूर्वक करवाया। फिर उनको सामवेद का अध्ययन करवाया और कुछ ही दिनों बाद उसे स्थगित कराकर उन्हें रुद्राष्टाध्यायी पढ़ाई गई, तत्पश्चात् यजुर्वेद संहिता 14 वर्ष की आयु में मूलशंकर ने कण्ठस्थ कर ली और अन्य वेदों के कुछ अंश भी याद कर लिए। इतना ही नहीं अपितु उन्होंने इस अल्पायु में ही निरुक्त, निघण्टु, पूर्व मीमांसा व कर्मकाण्ड के कतिपय अन्य ग्रन्थों का भी अध्ययन पूर्ण कर लिया।

जब शिवरात्रि को मूलशंकर ने शिवलिंग पर एक चूहे को उछलते–कूदते देखा और भक्तों द्वारा चढ़ाई हुई सामग्री को खाते और उसी पर मल–मूत्र करते हुए देखा बालक के मस्तिष्क में एक हलचल–सी मच गई, उसका कारण यह था कि उसे जिस शिव की बात बताई गई थी कि वह शंकर प्रलयंकारी, दुष्ट विनाशक, त्रिशूलधारी संहारक देवता है जिसके भृकुटि तानने मात्र से ही विश्व के प्रकंपित हो जाने की कल्पना उसके हृदय में समाई हुई थी। यह दृश्य देखकर उसने सोचा कि जो शिव अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता, वह हमारी रक्षा क्या करेगा? यह सोचकर उसकी मूर्तिपूजा के प्रति आस्था उठ गई और शिव रात्रि का व्रत तोड़कर वह घर पर आकर माता जी से भोजन करके सो गया और उसी दिन से उसके मन में सच्चे शिव की खोज करने के लिए घर छोड़कर वैराग्य की भावना उत्पन्न हो गई। इसके बाद सोलह वर्ष की आयु में उसकी छोटी बहन जो उसे बहुत प्यारी थी उसका हैजे में स्वर्गवास हो गया। और उन्नीस वर्ष की आयु में उसका चाचा जो उसको बहुत प्यार करता था उसका भी हैजे में स्वर्गवास हो गया। तब मूलशंकर की वैराग्य की भावना और अधिक बलवती हो गई और 21 वर्ष की आयु में उसने गृह त्याग दो उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कर दिया। पहला उद्देश्य सच्चे शिव की खोज और दूसरा उद्देश्य मृत्यु पर विजय प्राप्त करके मृत्युञ्जय बनने की भावना।

जब मूल शंकर गृह त्याग करके जंगल की ओर बढ़ रहा था तब उसको साधु वेश में कई ठग मिले जिन्होंने उसके शरीर पर पहने हुए गहने अँगूठी आदि भी ले लिये। जब वह आगे बढ़ रहा था तब उसको सायला ग्राम के पास एक दूसरा गुरु मिला जो ब्रह्मचारी था। मूलशंकर ने उससे ब्रह्मचर्य व्रत की दीक्षा ली और वह **'शुद्ध चैतन्य'** बन काषाय वस्त्र धारणकर हाथ में तुम्बा पकड़ लिया और योगाभ्यास में दत्तचित हो गये। यहाँ से वे कोटकाँगड़ा होते हुए सिद्धपुर पहुँचे। वहाँ से वे अहमदाबाद होते हुए बड़ौदा पहुँचे। अब 'शुद्ध चैतन्य' ने यह समझकर कि भोजनादि बनाने में काफी समय लग जाता है, इसलिए उसकी संन्यासी बनने की इच्छा हुई और संयोग से वे बड़ौदा से नर्मदा नदी के किनारे–किनारे चलते हुए चाणोद पहुँच गये। वहाँ से थोड़ी ही दूरी पर एक जंगल में एक अच्छे विद्वान् दण्डी स्वामी पूर्णानन्द परम हंस आये हुए थे। शुद्ध चैतन्य उस परम हंस के पास जा कर उनसे संन्यास की दीक्षा देने के लिए निवेदन किया। पहले तो उसने कुछ आनाकानी की परन्तु विशेष अनुरोध पर उसने शुद्ध चैतन्य को संन्यास की दीक्षा देकर उसका नाम 'दयानन्द सरस्वती' रख दिया और एक दण्ड और कमण्डल धारण करवा दिया। ये उसके तीसरे गुरु हुए। इनके चरणों में बैठकर स्वामी दयानन्द ने ब्रह्म विद्या सम्बन्धी कई ग्रन्थों का अध्ययन किया। कुछ दिन ठहरकर स्वामी पूर्णानन्द तो द्वारका चले गये और स्वामी दयानन्द वहीं चाणोद में ही रहे। यहाँ उनका सम्पर्क दो महान् योगियों ज्वालानन्द पुरी एवं शिवानन्द पुरी से हुआ। उनसे देव दयानन्द ने योग सीखने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने कहा कि हम अहमदाबाद के दुग्धेश्वर मन्दिर जा रहे हैं। स्वामी जी को वहाँ बुला लिया और वहाँ उनको योग के भेद और रहस्य समझाकर तृप्त कर दिया जिसके लिए स्वामी जी ने उनका बहुत अधिक आभार व्यक्त किया। ये स्वामी जी के चौथे व पाँचवें गुरु हुए।

यहाँ स्वामी जी हरिद्वार कुम्भ मेला में गये। वहाँ अनेक साधु–सन्तों से मिलकर स्वामी जी ऋषिकेश होते हुए केदारनाथ घाट आये, वहाँ उनको गंगा गिरी नामक एक श्रेष्ठ संन्यासी मिले, उनसे भी दो मास तक स्वामी जी ने योगाभ्यास सीखा तथा विचार विमर्श किया। इसलिए गंगा गिरी स्वामी जी के छठे गुरु हुए। तत्पश्चात् स्वामी जी 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में संलग्न स्वामी ओमानन्द जो स्वामी पूर्णानन्द के गुरु थे, स्वामी पूर्णानन्द जो स्वामी दयानन्द के गुरु थे, उन्होंने ही स्वामी दयानन्द को अपने शिष्य स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा जाने को कहा था और कहा था कि वही आपकी ज्ञान–पिपासा को शान्त कर देगा। ये सभी संन्यासी 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल थे। स्वामी दयानन्द भी अपना भेद छिपा कर इस संग्राम में कार्यरत् थे। यह हमारा इतिहास बतलाता है। इस 1857 के संग्राम के समय इन संन्यासियों की आयु इसी भाँति थी। स्वामी ओमानन्द की आयु 160 वर्ष, स्वामी पूर्णानन्द की आयु 110 वर्ष स्वामी विरजानन्द की आयु 79 वर्ष और स्वामी दयानन्द की आयु 33 वर्ष की थी।

वहाँ से स्वामी जी हिमालय के शिखर की ओर चल पड़े और अनेक स्थान देखते हुए ओखी मठ, जोशी मठ तथा बदरीनारायण होते हुए अलकनन्दा नदी के तट पर पहुँचे। वहाँ अनेक कष्ट पाते हुए अन्त में स्वामी पूर्णानन्द के कहे अनुसार तथा स्वामी विरजानन्द की भारी प्रतिष्ठा को सुनकर सन् 1860 में स्वामी जी मथुरा में स्वामी विरजानन्द की कुटिया पर पहुँचे। स्वामी विरजानन्द जी वेदों तथा वेदों सम्बन्धी आर्ष ग्रन्थों के बड़े प्रकाण्ड विद्वान् थे, साथ ही व्याकरण पर भी उनका पूरा अधिकार था। स्वामी दयानन्द, स्वामी विरजानन्द के पास तीन साल रहकर व्याकरण का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया और अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदोक्त सूत्र तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन भी किया जिससे स्वामी जी वेदों के मन्त्रों का सही अर्थ लगाना सीख गये। तीन वर्षों तक स्वामी जी ने अपने सद्गुरु विरजानन्द की बड़ी सेवा की जिससे स्वामी विरजानन्द प्रसन्न होकर अपना पूरा ज्ञान स्वामी दयानन्द के मन, मस्तिष्क में उड़ेल दिया जिससे स्वामी जी की ज्ञान पीपासा की तृप्ती हो गई। जब स्वामी जी तीन वर्ष में पूरा ज्ञान प्राप्त करके जाने लगे तब स्वामी जी अपने सद्गुरु को लौंग जो उनको अति प्रिय थी गुरु दक्षिणा के रूप में देने लगे, तब गुरु विरजानन्द नेत्रों से अश्रु धारा बहाते हुए कहा कि दयानन्द! मैंने तुझे दक्षिणा में लौंग देने के लिए नहीं पढ़ाया था। मैंने तो बहुत बड़ी आशा लेकर पढ़ाया था। तब स्वामी जी ने कहा 'गुरुदेव! आप आज्ञा करें, जो माँगेंगे वही मैं आपको दूँगा। तब गुरु विरजानन्द ने कहा' दयानन्द! मैंने तुम्हें सत्य वेदों के ज्ञान से अवगत करा दिया है। यदि मुझे सच्ची गुरु दक्षिणा देनी है तो इसी सत्य ज्ञान को मानवों को प्रदान करना। बहुत दिनों से भारत वर्ष में वेदों की शिक्षा का प्रचार व प्रसार प्रायः बन्द है जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड बहुत बढ़ गया है। तुम फिर से उनका उद्धार करो। विश्व में जो गलत पर्थाएँ व कुरीतियाँ चली हुई हैं उनको मिटाने का जीवन भर प्रयास करो। बस! यही मेरी गुरु दक्षिणा है। गुरु चरणों में नतमस्तक होकर स्वामी जी उनके आदेश का पालन करने का विश्वास दिलाकर और आशीर्वाद प्राप्त करके अपने कार्य क्षेत्र में कूद पड़े और जीवनभर अनेक दुःखों व कष्टों को सहकर वेदों का प्रचार व प्रसार किया तथा मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तर्पण, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, यज्ञों में पशु बली, सती प्रथा आदि कुप्रथाओं व कुरीतियों को जड़–मूल से नष्ट करने का जीवन भर प्रयत्न किया और आर्य समाज जैसी परोपकारी संस्था की स्थापना करके आगे भी इन कार्यों को करते रहने का साधन बनाकर केवल 59 वर्ष की आयु में 30 अक्टूबर 1883 को अमर गति को प्राप्त हुए। इस प्रकार स्वामी विरजानन्द स्वामी जी के अन्तिम और सातवें गुरु हुए।

इस प्रकार लेख के शीर्षक का कार्य पूरा हुआ और सुधि पाठकों से हम लेख से अपने ज्ञान की वृद्धि करेंगे, इस आशा के साथ लेख को यहीं विराम देते हैं।

ओ३म् शान्ति! शान्ति! शान्ति!!!

**180 एम.जी. रोड,**
**दो तल्ला, कोलकाता**
**मो. 9830135794**

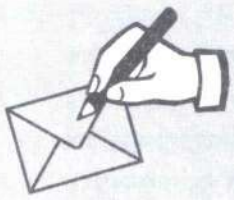

# पत्र/कविता

## जहर के सौदागार हैं, ये लोग !

मध्यप्रदेश की सरकार एक ऐसा काम कर रही है, जिसका अनुकरण देश की सभी सरकारों को करना चाहिए और केंद्रीय सरकार को इस मामले में विशेष पहल करनी चाहिए। म.प्र. ने मिलावटखोरों की ऐसी–तैसी कर दी है। पिछले डेढ़ दो हफ्तों से उसने विभिन्न शहरों, कस्बों और गांवों में छापे मारे हैं और दूध में मिलावट करनेवाले दो व्यापारियों को पकड़ा है। इन लोगों के कारखाने में कास्टिक सोडा, यूरिया आदि कई घातक पदार्थों की बोरियां पकड़ी गई हैं। इनके दूध की जांच करने पर पता चला है कि उसमें घातक बीमारियां पैदा करनेवाले रसायन मिले हुए हैं। ऊपर से देखने पर जो बिल्कुल दूध–जैसा ही लगता है, वह तरल पदार्थ धीमे जहर से कम नहीं है।

आश्चर्य है कि इन जहर के सौदागरों की काली करतूत पर हमारे बड़े अखबारों और टी.वी. चौनलों ने खास ध्यान नहीं दिया। ऐसे प्रच्छन्न हत्यारों के लिए जो सजा का कानून है, वह भी शुद्ध मजाक है। सिर्फ 3 माह की सजा और 10 हजार रु. जुर्माना। म.प्र. के मुख्यमंत्री और लोक–स्वास्थ्य मंत्री को बधाई कि उन्होंने इन मिलावटी हत्यारों को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी देश भर के उन हजारों मिलावटखोरों पर तभी असर करेगी जबकि इनमें से गंभीर अपराधियों को उम्र–कैद और मौत की सजा तक दी जाए और उनकी चल–अचल संपत्ति जब्त की जाए। यों इनकी न्यूनतम सजा 10 साल और हर्जाना 10 लाख रु. की जाए। मिलावटखोर साधारण हत्यारा नहीं होता, वह सामूहिक हत्यारा होता है। इसलिए सजा–ए–मौत जेल के अंदर नहीं, चौराहे पर दी जानी चाहिए।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

## सचमुच अमर हुआ है कश्मीर में तिरंगा

खुशियों का घर हुआ है कश्मीर में तिरंगा।
फिर से निडर हुआ है कश्मीर में तिरंगा।
श्यामा प्रसाद खुश हैं विख्यात जो मुखर्जी
सचमुच अमर हुआ है कश्मीर में तिरंगा।

खोया हुआ खज़ाना वर्षों में हाथ आया।
अभिशाप मर गया है वरदान शीश छाया।
सब कुछ नकद हुआ है धारा से था उधारा,
है झूमता तिरंगा बलिदान रंग लाया।

हम भूल नहीं पाये आह्वान मुखर्जी का।
आशीष शीश पर था वरदान मुखर्जी का।
धारा तीन सौ सत्तर कालिख थे आँसू थे,
अव्यर्थ रहा आखिर बलिदान मुखर्जी का।

फिर से अखंड लगता कश्मीर खंडितों का।
निर्दोष निराश्रित का, अब दौर दंडितों का।
अपने ही घर में हम थे शरणार्थी जैसे,
दुष्टों से मुक्त हुआ कश्मीर पंडितों का।

चीलों का सांपों का गिद्धों का न डर होगा।
भारत माँ की जय का जयगान अमर होगा।
धारा से निकली है पावन अमृतधारा,
यह सोच के खुश हूँ मैं कश्मीर में घर होगा।

बलिदान शहीदों का दशमेश का सीना है।
सौगन्ध अयोध्या की अवधेश का सीना है।
खुद्दार जागते ही गद्दार भागते हैं,
छप्पन इंची सीना कुल देश का सीना है।

गद्दार ही कहते हैं बर्बादी आई है।
नाचे हंसती गाती शहजादी आई है।
कितने बलिदान दिये तब ही यह दिन आया,
सचमुच घाटी में अब आज़ादी आई है

जनरल जोरावर सा रणधीर हमारा है।
श्यामा प्रसाद जैसा प्रणवीर हमारा है।
हम सत्तर साल तपे तब सत्तर हट पाई,
आधा ही नहीं पूरा कश्मीर हमारा है।

सारस्वत मोहन 'मनीषी'
ए–1/13–14, सै. 11
रोहिणी, दिल्ली–110085
मो.9810835335

## पौधारोपण को गतिशील बनाएँ

जब वृक्ष ही न रहे जग में, फूल–फल, जड़ी–बूटियाँ कहाँ से लाओगे।
वृक्षहीनता से भूक्षरण भी नहीं रुकेगा, भूजलभरण भी न कर पाओगे।।

कटते जा रहे हैं वृक्ष नित्य प्रति, हम भी हैं टुकुर–टुकुर बस देख रहे।
आओ नवचेतना जगाएँ मन लगाकर, सन्त वचन भी यही सीख हैं दे रहे।।

कुछ उत्साही व्यक्ति और संस्थाएँ, यत्र तत्र हैं सतत यत्न कर रहीं।
सफल इस प्रयत्न को कहाँ तक कहें, असफल भी तो कह सकते नहीं।।

लौंग, इलायची, बदाम, छुहारा, किसमिस, काजू देवपूजन में चढ़ें।
नारियल, केला, सेब, अनार, फल सहित थाली उन्हें भेंट करें।।

गेंदा, गुलाब, चमेली के पौधे यदि न रहे, देवों पर पुष्पांजलि कैसे चढ़ाओगे।
शवों पर पुष्पवर्षा हेतु तरस जाओगे, स्वागत में हार कैसे पहनाओगे।।

ऐलोवेरा, हल्दी, सौंफ, तुलसी, अजवायन, जीरा, कालीमिर्च जब होंगे नहीं।
नीम, बबूल के टूथपेस्ट–साबुन, तथा मसालों के दर्शन होंगे नहीं।।

यदि केसर, चन्दन, कुमकुम न मिले, देवों को तिलक कैसे लगाओगे।
तुलसीदास चन्दन घिसें, यह सार्थक कैसे कर पाओगे।।

ध्यान से सुन लो 'वेद' का वचन – अश्वत्थे वो निषदनम्।
पीपल तले बैठना है शुभकारी, अमृतभरी–यस्य छायाऽमृतम्।।

वेदप्रकाश शास्त्री
4–ई, कैलाश नगर
फाजिलका (पंजाब)
मो. 9463428299

## जीवन की उन्नति के लिए कुछ अनमोल विचार

उन्नति की सम्पूर्ण ऊँचाइयों को छूने का सोपान विद्या है। विद्या वही, जो ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि का यथावत् ज्ञान करवाये। सफलता प्राप्त करने का सबसे बड़ा साधन समय का सद्उपयोग है। शरीर व आत्मा को ठीक रखने के लिए धन नहीं अपितु संयम–नियम–सदाचार युक्त मर्यादित रहना जरूरी है।

किसी भी श्रेष्ठ कार्य को कल पर छोड़ना उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। किसी भी घर–परिवार–समाज व राष्ट्र के नियमानुसार अनुशासन में रहने से संगठन शक्ति बढ़ती है। सार्वजनिक नियमों का उल्लंघन करने से समाज व राष्ट्र की बहुत बड़ी हानि होती है। स्वार्थ लालच की जननी है। इससे व्यक्ति का पतन हो जाता है। परमार्थी व्यक्ति स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों को कष्ट नहीं देता। प्राकृतिक ऋण से उऋण होने के लिए प्रत्येक गृहस्थी को दैनिक यज्ञ करना अनिवार्य है। अपने कर्त्तव्य का ठीक पालन करना सबसे बड़ा धर्म है।

आचार्य रामसुफल शास्त्री हाँसी
मो. 9416034759–9466472375

**********

# डी.ए.वी. गिरिडीह (सिरसिया) में कारगिल विजय उत्सव

बी.एन.एस. डी.ए.वी. स्कूल में कारगिल युद्ध में शहीद सैनिकों को भावभीनी श्रद्धांजलि एक सांस्कृतिक कार्यक्रम शहीद द्वारा दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सी.आर.पी.एफ. 7वीं बटालियन कमांडेंट श्री अनिल कुमार भारद्वाज उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने विद्यालय प्रांगण में स्थित शहीद ए कारगिल स्मारक पर तिरंगा लहरा कर कारगिल युद्ध में शहीद हुए सैनिकों श्रद्धांजलि दी। इस दौरान विद्यालय बैंड के द्वारा "सारे जहां से अच्छा" और राष्ट्रगान धुन बजायी गयी। क्षेत्रीय निदेशक, झारखंड, जोन (एच), डॉ. पी हजारा, ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और कहा कि देशभक्ति कोई शब्द नहीं

बल्कि एक ऐसा जज़्बा है जो हमारी सेना के खून के हर कतरे में बहता है।

मुख्य कार्यक्रम स्थल पर छात्रा सृष्टि कुमारी द्वारा "ऐ मेरे वतन के लोगो" नग्मे की प्रस्तुति दी। जिसे सुन सभी की आँखे नम हो गई। आर्केस्टा टीम द्वारा सैनिकों के जीवन पर आधारित सदाबहार धुन "संदेशे आते हैं" की प्रस्तुति दी और अंत में जापान की सांस्कृतिक चेतना को प्रदर्शित करता हुआ एक समूह नृत्य प्रस्तुत किया गया।

मुख्य अतिथि महोदय श्री अनिल कुमार भारद्वाज जी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कारगिल युद्ध एक ऐसा युद्ध था जिसमें देश के सभी वर्ग, सभी तबके के लोग, एकता के सूत्र में बंधकर खड़े हुए और देशभक्ति का ऐसा जज्बा देश में पैदा हुआ जो काबिले तारीफ था। यह युद्ध काफी ऊंचाइयों पर लड़ा गया था जहां भारतीय सेना के लिए सारी परिस्थितियां विपरीत थीं लेकिन रणबांकुरों ने विजयश्री दिला कर देश के स्वाभिमान की रक्षा की।

वरिष्ठ एल एम सी सदस्य श्रीरामानंद सिंह (भूतपूर्व आईएएस अधिकारी) ने कार्यक्रम के अंत में सबको धन्यवाद ज्ञापित किया।

# आनन्द आरोग्य मंदिर (धर्मार्थ मेडिकल सेन्टर) द्वारा निःशुल्क हृदय जाँच शिविर

आरोग्य मंदिर द्वारा एक निःशुल्क हृदय जांच कैम्प का आयोजन "मेट्रो हाई इन्स्टीट्यूट" के सौजन्य से आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत ई.सी.जी., शुगर टैस्ट, बी.पी. एवं फेफड़ों (पी.एफ.टी.) एवं हड्डियों की निःशुल्क जांच की गई।

शिविर में आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग के इर्द-गिर्द के इलाकों के निवासियों ने अपनी चिकित्सीय जांच करवाई। लगभग 100 से अधिक लोगों की जांच की गई।

डॉ. (लेफ्टिनेंट कर्नल) शिशिर कुमार, चीफ स्पाईन सर्जन, मेट्रो हॉस्पिटल, ने हड्डियों की जांच, डॉ. अजय अग्रवाल ने

हृदय जांच एवं डॉ. अरूण अग्रवाल ने फेफड़ों एवं श्वसन तंत्र की जांच में अपना सहयोग दिया। शिविर में डॉ. संदीप चतरथ, क्षेत्रीय सीईओ एवं चिकित्सा निदेशक, मैट्रो हॉस्पिल एवं हाई इंस्टीट्यूट भी उपस्थित थे।

आर्य समाज (अनारकली) के मंत्री ब्रिगेडियर अशोक कुमार अदलखा ने बताया कि आर्य समाज (अनारकली) परिसर में चल रहे आनन्द आरोग्य मन्दिर (प्राथमिक स्वास्थ्योपचार केन्द्र) जिसका शुभारंभ समाज के निम्न एवं कमजोर लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ मुहैया कराने के उद्देश्य से हुआ था। अब तक नौ निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर संचालित कर चुका है। झुग्गी झोंपड़ी के रहने वालों ने इन शिविरों का भरपूर लाभ उठाया।

इस निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर को सफल बनाने में आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी का मार्ग दर्शन कार्यकारी प्रधान श्री अजय सूरी, तथा डॉ. रमेश आर्य को जाता है।

# हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में मासिक यज्ञ का आयोजन

"हम सब को आत्मनिरीक्षण कर अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सकारात्मक सोच के साथ बेहतर प्रदर्शन करते हुए सदैव अग्रसर रहना चाहिए एवं सकारात्मक विचारधारा से ही समाज का पथ प्रदर्शन करना चाहिए।" यह विचार प्राचार्या प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन जी ने महाविद्यालय में आयोजित मासिक यज्ञ के अवसर पर प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर में श्री राजीव कुमार ने

कहा कि मनुष्य को विनम्रता का गुण अपनाने का प्रयास करना चाहिए क्योकि विनम्रता ही मनुष्य की प्रगति में सहायक है। नॉन-टीचिंग विभाग के सभी सदस्य इस अवसर पर उपस्थित रहे एवं यज्ञ में अपनी सहभागिता दी। प्राचार्या ने उन सदस्यों को भी सम्मानित किया, जिनके जन्मदिन इस महीने में आने वाले हैं।

अन्त में शान्ति पाठ कर सर्वजन सुखायः सर्वजन हिताय की कामना की गई।

# गुरुकुल लाडवा में चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्ष महाविद्यालय यज्ञशाला गुरुकुल लाडवा का 90वाँ चरित्र निर्माण शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। स्वाहा शब्द की मधुर ध्वनि के साथ मुख्यतिथि श्री संजय बेनीवाल, आई.पी. एस पुलिस महानिदेशक, चण्डीगढ़, द्वारा पूर्णाहुति प्रदान की गई। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विश्वानन्द जी के सानिध्य में एवं यजमान दम्पत्ति जस्टिस प्रीतमपाल एवं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती माया प्रीतम द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार भी आचार्य कृष्णदेव द्वारा किया गया।

यज्ञ के अनन्तर मुख्यातिथि, समारोहाध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यह कार्यक्रम विशेष रूप से संस्कृत भाषा के महत्त्व एवं बालिकाओं की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए किया गया। मुख्यातिथि द्वारा प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। विद्यार्थियों ने संस्कृत गीतिका, नाटिका, भजन, भाषण, योगासन आदि की प्रस्तुति दी। मुख्यातिथि जी ने कक्षा 8वीं., 10वीं में प्रथम स्थान प्राप्त बालक बालिकाओं को प्रति विद्यार्थी 1100, रुपये एवं स्मृति चिह्न साहित्य पुस्तकें भेट कर सम्मानित किया। समारोहाध्यक्ष डॉ. सोमेश्वर दत्त एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. सुरेन्द्र मोहन मिश्र संस्कृत विभाग कु.वि.कु का जस्टिस महोदय ने अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का समापन ऋषि लंगर के साथ सम्पन्न हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 14/15-08-2019

# डी.ए.वी. वेलचेरी, चेन्नई में वैदिक प्रवचन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वेलचेरी, चेन्नई में वेदों की वार्षिक गतिविधियों के अंतर्गत वैदिक प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यार्थी वृंद एवं शिक्षकगणों को वेदों की रसमयी धारा से परिचित करवाने हेतु पंडित तमिलअरसन जी को आमंत्रित किया गया। इस संदर्भ में उन्होंने धार्मिक आडंबरों पर कुठाराघात करते हुए कर्म की महिमा को मंडित किया और कहा "वेदों का श्रवण एवं गायन तन और मन दोनों को आंदोलित और जागृत करता है। शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक प्रताड़ना उच्च सभ्यता की कसौटी नहीं होती। जन–जन में प्रेम भाव का संचार ही आर्य समाज की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु है।" उन्होंने बताया कि

कर्म ही मानव जीवन के वर्तमान एवं भविष्य की रूपरेखा तैयार करते हैं। इसलिए कर्म ही हमारे अस्तित्व की मूल पूंजी है। पंडित तमिलअरसन ने अपने प्रवचन के द्वारा वर्तमान युवा पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त किया।

विद्यालय एवं तमिलनाडु आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा की प्रधान श्रीमती मीनू अग्रवाल ने 'आर्य' शब्द के वास्तविक अर्थ से विद्यार्थियों को अवगत कराया। आर्य समाज के सिद्धांतों की वर्तमान जीवन एवं कार्यशैली में उपयोगिता बताते हुए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

# डी.ए.वी. सेक्टर-49, गुरुग्राम में 'स्कूल मेडिकल एमरजेंसी रिस्पोंस टीम' हेतु शिक्षण कार्यक्रम

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–49, गुरुग्राम में 'स्मर्ट' (SMERT) – स्कूल मेडिकल एमरजेंसी रिस्पांस टीम' का गठन किया गया है। इसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए 'कोड रेड' नामक कार्यक्रम का पुनः आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली तथा एनसीआर के हिस्सों से आने वाली 'स्मर्ट टीम' के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रधानाचार्या श्रीमती चारु मैनी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर गंगा राम अस्पताल के सर्जन डॉ. श्रीनिवास गोपीनाथ जी, 'आई हेल्प गुरुग्राम' से डॉ. के. पाणि कुमार नायडू जी तथा लंग केयर फाउंडेशन की डायरेक्टर सुश्री मातृश्री भी उपस्थित थीं।

गंगा राम अस्पताल के सर्जन डॉ. श्रीनिवास गोपीनाथ ने अस्थमा विषय पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को ART (अस्थमा रिस्पोंस ट्रेनिंग) की जानकारी दी, जिसके अंतर्गत उन्होंने बताया कि अस्थमा की स्थिति में किस प्रकार प्राथमिक उपचार दिया जाए। 'आइ–हेल्प गुरुग्राम' के डॉ. के. पाणि कुमार नायडू ने प्राथमिक चिकित्सा के बारे में बताते हुए बच्चों को प्रशिक्षित किया। छात्रों ने यह भी सीखा कि किसी आपातकालीन स्थिति में किस प्रकार धैर्य के साथ किसी मरीज़ में भरोसा उत्पन्न किया जा सकता है। दोनों सत्रों के अतिरिक्त एक प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया जिससे उनकी जानकारियों एवं तैयारियों को परखा गया। सभी प्रतिभागी इसका अनुभव प्राप्त करके लाभान्वित हुए।

प्रधानाचार्या ने भाग लेने वाले सभी विद्यालयों को इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बधाई दी। कार्यक्रम कई तरह की जानकारियों और मार्गदर्शनों से भरा हुआ था जिसमें भाग लेने वाले सभी व्यक्ति यह जान पाए कि आपातकालीन परिस्थिति में किस तरह प्राथमिक उपचार के द्वारा लोगों की सहायता की जा सकती है।

# गोपीचन्द कॉलेज अबोहर में नवसत्रारम्भ पर हुआ यज्ञ

गोपीचन्द आर्य महिला कॉलेज अबोहर में नवसत्रारम्भ यज्ञ की पावन परम्परा से किया गया। आयोजन में छात्राओं को शुभाशीष देने व सेठ गोपीचन्द जी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए संस्थापक परिवार के सदस्य व कॉलेज चेयरमैन श्री देवमित्र जी आहूजा, श्रीमती वीना आहुजा व पुत्रवधू श्रीमती चारू आहुजा मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुए। 'कृष्णा सेन ट्रस्ट' गुरुग्राम की चेयरपर्सन श्रीमती उमा आहुजा विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारीं।

श्री अशोक शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुए यज्ञ में वैदिक मंत्रोच्चार करते हुए सबने श्रद्धा एवं भक्ति सहित प्रातःकालीन आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञ एवं भजनोपरान्त शिक्षा के क्षेत्र में पंजाब यूनिवर्सिटी की मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त कर नए कीर्तिमान स्थापित करने वाली छात्राओं को अतिथिगणों द्वारा मेडल एवं प्रोत्साहन राशि देकर पुरस्कृत किया गया। मुख्य यजमान श्री देवमित्र जी ने कॉलेज की सर्वोप्रकारेण उन्नति के लिए प्राचार्या जी, समूह स्टाफ एवं छात्राओं को साधुवाद दिया। प्राचार्या, डॉ. रेखा सूद हाण्डा, ने छात्राओं को डी.ए.वी. की महान् परम्पराओं से अवगत करवाते हुए सब अतिथियों का अभिनन्दन एवं आभार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की समाप्ति ने सेठ गोपीचन्द जी की पावन–स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस सामूहिक यज्ञ एवं प्रार्थना में डी.ए.वी. कैम्पस अबोहर के प्राचार्यगणों, प्राध्यापक वर्ग, छात्राओं व उनके अभिभावकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के अंत में सभी को ऋषिलंगर वितरित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**